ISSN : 2582-1342

# भोजपुरी साहित्य सरिता

अप्रैल 2024 / वर्ष 8, अंक-1

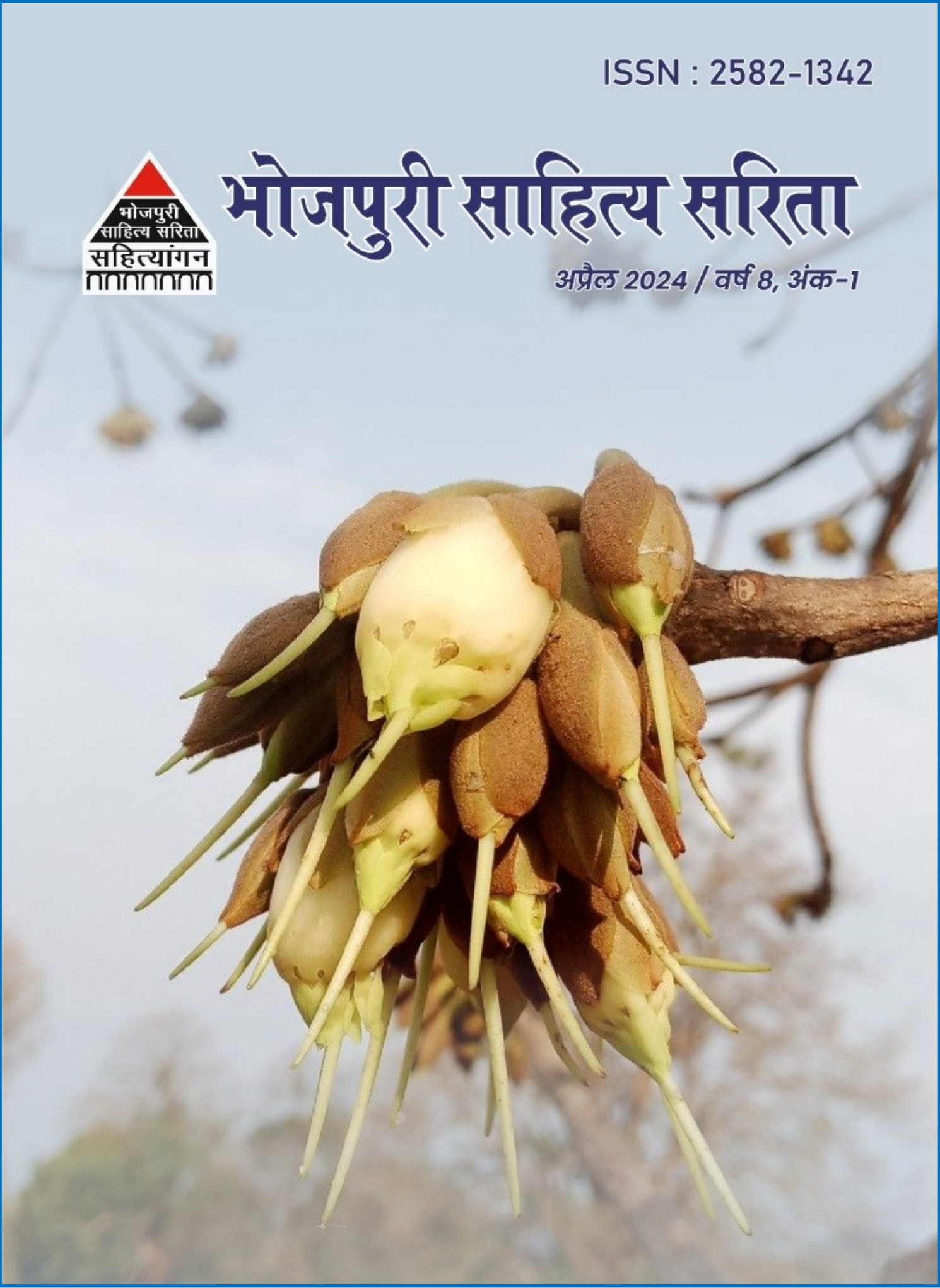

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET )
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

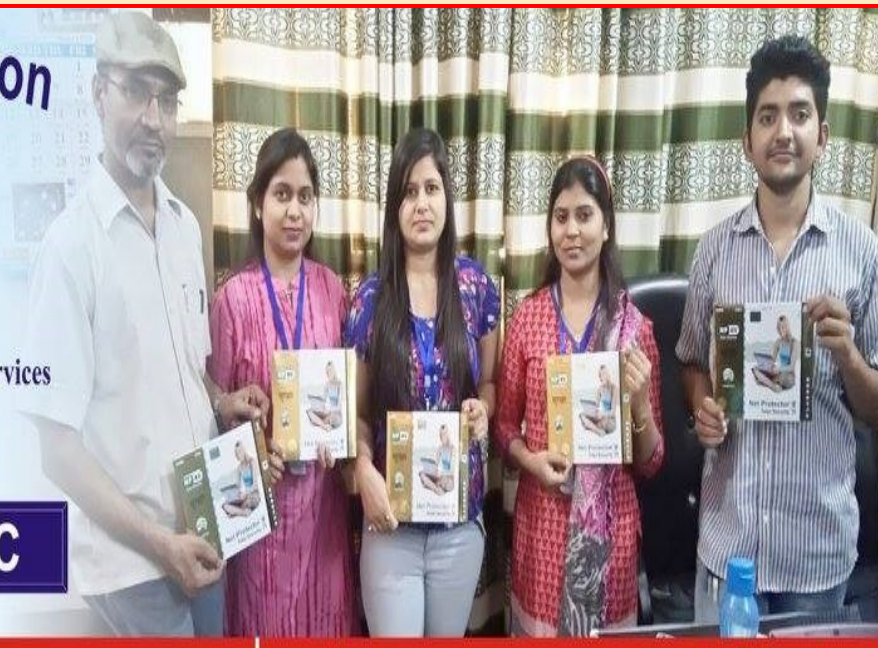

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

# भोजपुरी साहित्य सरिता


## संरक्षक

**रामप्रकाश मिश्रा** (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
**अशोक श्रीवास्तव** (गाजियाबाद)
**विनोद यादव,** गाजियाबाद

## प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

## कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

## साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

## सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

## सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

## तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

## छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

## प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)



## प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली



### : आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना



**♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦**

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
**PH:** 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com


**नोट :** पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

# अनुक्रम


## • संपादकीय

चैता आ चुनाव– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 5

## • धरोहर

पारंपरिक चैता / 6

### आलेख/शोध लेख/निबंध

जिनगी के छंद में आनंद भरि
आइल रामा, चइत महिनवा– कनक किशोर / 10–12
चैता गीतन के रुचि आ रचाव
– डॉ सुनील कुमार पाठक / 14–19
चइता गीतन पर एगो दीठी
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 24–26
बिरहिन के बेजोग भावभिव्यक्ति
हवे चैता–केशव मोहन पाण्डेय / 38–40
आइल चइत उतपतिया हो रामा
–भगवती प्रसाद द्विवेदी / 40–42

## • समीक्षा/पुस्तक चर्चा

माई भाषा आ माटी से प्रेम के अलख
जगावत 'भोजपुरी भुंइ'–रवि प्रकाश सूरज / 30–33

### संस्मरण/स्मृति आख्यान

गाँव में गूंजत नइखे ए हो रामा– मनोज
भावुक / 21–23

## • कविता/गीत/गजल

चइत महिनवाँ–सुरेश कांटक / 7
चैत मधुमसवा–हीरलाल द्विवेदी 'लाल' / 7
चइत महिनवाँ– सरोज त्यागी / 7
रस ना बुझाइल–डॉ अशोक द्विवेदी / 8
बसंत अइले नियरा– केशव मोहन पाण्डेय / 8
चइता– आनंद संधिदूत / 8
गइले विदेसवा–सुरेन्द्र प्रसाद गिरि / 9
सुनी मोरे रामजी–गीता चौबे 'गूँज' / 9
तीन गो चइता– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 13
दू गो चइता– भोलानाथ गहमारी / 19
तरसत अँखिया जुड़इली हो–
उमेश कुमार पाठक 'रवि' / 20
काहे रूसी गइले– भावेश अंजन / 20
गरीब किसनवा–कनक किशोर / 23
दू गो चइता–दिनेश पाण्डेय / 24
कउवा गाना गावत बा– राम सागर सिंह / 26

## • कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

पुरानी कहानी– नवही मनमानी– कौशल
मोहब्बतपुरी / 27–29
गवना के लोर – विद्याशंकर विद्यार्थी / 33–34
डाला के साइत– जनक देव 'जनक' / 35–38
अबाटी बंटी– बिम्मी कुँवर / 42–43
नचनिया–डॉ रेनु यादव / 44–45

## • बेगर लाग लपेट के

बिलारी के भागे क सिकहर–
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 46

# चैता आ चुनाव

गजब हाल बा भाई! एक त चइत चहचहाइल बाटे आ मन,मनई,मेहरारू संजोग वियोग के चकरी में चकरघिन्नी भइल बाड़ें, ओही में ई चुनाव के घोषणा, मने धधकत आगि में घीव डला गइल। दूनों ओर जी हजूरी के तड़का, अब उ नीमन लागे भा बाउर। जिये के दूनों के पड़ी, मन से भा बेमन से। जब लोग बाग खेती–किसानी से दूरी बनावे लागल बा, त ओहमें ई राँड रोवने नु कहाई कि अब ढोलक के थाप आ झाल के झंकार सुनात नइखे। खेती–गिरहस्थी से थाकल लोगन खातिर फगुआ आ चइता टानिक लेखा रहल। जवन उछाह घर में आवे वाली नई फसल का लेके रहत रहे, उ राग बन के गाँव दूसिवान पंवरे लागत रहे। उहाँ सिंगार, वियोग ,जर, जमीन, देवता, पितर , बोली–ठिठोली, मान–मनुहार मने कि सभका खातिर उचित समरपन के बोध का संगे अपना परंपरा के पीढ़ी दर पीढ़ी जोगा के चलत लोगन के जियतार समूह गवें गवें आपन जिनगी के दिन पूरा क के जा चुकल बा। गाँवो गिरांव के नवकी पीढ़ी धूर माटी से दूर हो चुकल बा भा सहर पलायन क चुकल बा। सहरन में होखे वाला कार्यक्रम गोबरउरा के जनम से बाचे के परयास भर बा। प्रेम के रसगर गीतन से पहिले सुमिरन के परम्परा आ ओहसे उपजे वाला आनंद आ ओहके जीये वाला समूह के रंगत अलगे रहत रहे। बसंत पंचमी से गवनई के सिरीगनेस आ भर चइत तक गुलजार रहे वाला गाँव अब बिरान हो चुकल बाड़ें सन। मादकता भरल गीतन पर लवंडा के नाच के देखनिहार आ सुननिहार लोग अब ओह नचिया का संगे अलोप हो चुकल बा।कहीं कुछ लोग एहके जियतार बनावे खातिर लगलों बाड़न बाकिर अइसन लोगन के कमी ढेर बा। एकरा से हटिके देखल जाव त चैत महीना भगवान राम के जनम के महीना हवे। उनुके जिकिर बेगर चैता के बात बेमानी लागेला। फेर देखीं–

**जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**
**संपादक**
**भोजपुरी साहित्य सरिता**

*'रामजी जे लिहनी जनमवा हो रामा*
*चइत महिनवा।'*

एह उतपाती चइत में चुनाव अपने रंगत के संगे बा। केंद्र सरकार के चुने खातिर लोगन के अपना मत देवे के बा। चैता गीतन लेखा इहवों ढेर उदासीनता बा। सरकार के मतदाता जागरुकता अभियानो चल रहल बा। एह अभियान में विद्वत जन, ब्योपारी, डाक्टर, मीडिया, प्रशासनिक अधिकारी के संगे–संगे साहित्यकारो लोग जनता के जगावे में लागल बा।ई त चुनाव के एगो पक्ष बा।हर चुनाव के कई कई गो पक्ष होला, इहवों बा। पाँच बरीस के बाद नेता लोग जनता के हाल–चाल ले रहल बा। वादा आ नारा के बौछार से जनतों खूब सराबोर हो रहल बा। पीये–खाये वाला समूह अपना काम में लागल बा। कुछ ठीकेदारो लोग वोट के ठेका लेत देखात बा। मने इहवों चैता लेखा कई कई गो राग बज रहल बा। एह घरी के चुनावी बयार में कुछ लोगन के बहार बा। तबे नु कहे के पड़ेला–

*बरीस पाँच बीतल अइहें संवरिया।*
*सजाय राखो फुलवा से दुवरिया॥*

मने गवनई इहों कम नइखे।सोसल मीडिया पर अलग अलग ढंग के गवनई आ छीछालेदर अपना मति–गति से चल रहल बा। इहाँ बड़का–बड़का विश्लेषक लोग विश्लेषण में जुटल बा।चाल, चरित्र आ चेहरा लोग आपन आपन झमका रहल बा। जनता के लोभा रहल बा। अब एहमें के कतना सफल होखी, ई त 4 जून के सोझा आई । एह घरी सभे चुनाव आ चैता के ढेर थोर जी रहल बा। अपनों के एह सब से विरत हो खल मोसकिल लागल, से भोजपुरी साहित्य सरिता के ई अंक चइता पर केन्द्रित बा। कुछ सुघर सामग्री जुटावे के परयास भइल बा। हमनी के अपना परयास में केतना सफल भइल बानी सन, रउवा सभे के एकर निर्णय करे के बा। पत्रिका परिवार के अपना एह निर्णय से वंचित मति राखब सभे ।

■■

*रउरा सभे के आपन––*

**जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**
**सम्पादक**
**भोजपुरी साहित्य सरिता**

# पारंपरिक चइता

## तोरी मीठी बोलिया

सुतल सइयाँ के जगावे हो रामा,
तोरी मीठी बोलिया।

रोज रोज बोले कोइली साँझ हो सबेरवाँ
आजु काहें बोले अधरतिया हो रामा,
तोरी मीठी बोलिया।

अब ले त रहलू कोइली बन के कोइलिया
अब तूहूँ भइलू सवतनिया हो रामा,
तोरी मीठी बोलिया।

होय दा बिहान कोइली बढ़ई बोलइबो
जरी से कटइबो सिरिसिया हो रामा,
तोरी मीठी बोलिया।

❑❑

## चइत महिनवाँ

सुरेश कांटक

जियरा धधकी हलसाये  हो रामा,
चइत महिनवाँ।
पपिया न तनिकों मोहाये हो रामा
चइत महिनवाँ।

गोदिया में रहनी अबोध हम खेलत
देखत निरखत समुझत झेलत
नासि फाँसि मारि, गीत गावे हो रामा
चइत महिनवाँ।

हमनी के बूझे नाही केहू दरदिया
सालतारे भीतरे बा उपरे परदिया
चलु सखि परदा हटाये हो रामा,
चइत महिनवाँ।

मौसम कांटक भइले बेहाया
बेटियो बहिनिया प करे नाहि दाया
अंखियन में दँइता समाये हो रामा,
चइत महिनवाँ।

❑❑

❍ राँची झारखंड

## चैत मधुमसवा

हीरालाल द्विवेदी 'लाल'

बन बन फुलेला पलसवा हो रामा,
चैत मधुमसवा।
सेमर उड़ेला अकसवा हो रामा,
चैत मधुमसवा।

बेला जूही चमेली चंपा,
सरसिज खिले सरोवर पंपा,
सुरभित गिरि तरु लतवा हो रामा,
चैत मधुमसवा।

राम लखन गिरि बन में डोले,
बिरह बढावत कोयल बोले
खोजत सिया को सजनवा हो रामा,
चैत मधुमसवा।

पूछत जात लता तरु पांती,
रोवत प्राकृत नर की भांती ,
''लाल ''भाल पर पसिनवा हो रामा,
चैत मधुमसवा।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

## चइत महिनवाँ

सरोज त्यागी

छुटि जइहैं बाबा के अंगनवां हो रामा,
होत गवनवां ।।

छुटि जइहैं माई हो छुटि जइहैं बाबा
संखिया सहेलियन से टूटि जइहैं नाता,
छुटि जइहैं बहिनी बिरनवां हो रामा
होत गवनवां।।

अम्मा कहेली बेटी हाली हाली अइहा,
बाबा कहेलं बेटी तीजिया खिचड़िया,
भउजी क थोर बाटै मनवा हो रामा
होत गवनवां।।

निबिया के तरे डोला  रखि दे कहरवा,
तनी सा उठा दा भइया डोली क ओहरवा।
देखि लेहीं खेत खरिहनवां हो रामा
होत गवनवां।।

❑❑

❍ गाजियाबाद उत्तर प्रदेश

## रस ना बुझाइल

**डॉ अशोक द्विवेदी**

गते गते दिनवाँ ओराइल हो रामा
रस ना बुझाइल।

अंतरा क कोइलर कुहुंकि न पावे
महुआ न आपन नेहिया लुटावे
अमवो टिकोरवा न आइल हो रामा
रस ना बुझाइल।

चिऊँ चिऊँ चिकरेले गुदिया चिरइया
हाँफे बछरुआ त हंकरेले गइया
पनिया पताले लुकाइल हो रामा
रस ना बुझाइल।

रूसल मनवाँ के झुठिया मनावन
सीतल रतियो में दहके बिछावन
सपना, शहर उधियाइल हो रामा,
रस ना बुझाइल।

तनी अउरी पवला के, हिरिस ना छूटल
भितरा से कवनो किरिनियो न फूटल
संइचल थतियो लुटाइल हो रामा,
रस ना बुझाइल।

❑❑

❍ संपादक , 'पाती'
सामने घाट, वाराणसी
–221005

## वसंत अइले नियरा

**केशव मोहन पाण्डेय**

हरसेला हहरत हियरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

मन में मदन, तन लेला अंगड़ाई,
अलसी के फूल देख आलस पराई,
पीपर–पात लागल तेज सरसे,
अमवा मोजरिया से मकरंद बरसे,
पिहू–पिहू गावेला पपीहरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

मटरा के छिमिया के बढ़ल रखवारी,
गेहूँआ के पाँव भइल बलीया से भारी,
नखरा नजर आवे नजरी के कोर में,
मन करे हमहूँ बन्हाई प्रेम–डोर में,
जोहेला जोगिनिया जियरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

पिया से पिरितिया के रीतिया निभाएब,
कवनो बिपत आयी तबो मुस्कुराएब,
पोरे–पोर रंग लेब नेहिया के रंग में,
कलपत करेजवा जुड़ाई उनके संग में,
हियरा में बारि लेहनी दीयरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

❑❑

❍ राजापुरी, नई दिल्ली

---

## चइता

**आनन्द सन्धिदूत**

रचि भइया फोनवा लगइतअ हो रामा
पिया परदेसिया।
पिया के नमरवा मिलइतअ हो रामा
पिया परदेसिया।

जहाँ पिया गइले तहाँ दिन इहाँ रतिया
जगलो के फेर से जगइतअ हो रामा
पिया परदेसिया ।

कुछ नाहीं कहलीं सुरुज चना सोझवा
झुठहीं कोहइला के मनइतअ हो रामा
पिया परदेसिया ।

कुछ नाहीं चाहीला हो कुल्हि सुख संगही
मन के बसन्त रितु अइतअ हो रामा
पिया परदेसिया ।

❑❑

## गइले बिदेसवा

**सुरेन्द्र प्रसाद गिरि**

पियवा भइले सपनवा हो रामा
गइले बिदेसवा ।
नयना भइले सावनवा हो रामा
गइले बिदेसवा ।

महुआ के कोचवा,अमवा मोजरिया
झउँसेला देहिया पछेया बेयरिया,
चिहुंक उठे अचके परनवा हो रामा
गइले बिदेसवा ।

सेमरा फुलइले पोखरा कगरिया
खिरकी से झाँकेली नवकी बहुरिया,
बउराइल मन के सुगनवा हो रामा
गइले बिदेसवा ।

राती–अधरतिया कुहूके कोइलरिया
होत भिनसार कहीं बाजे रे बँसुरिया
इयाद आवे दिन गवनवां हो रामा
गइले बिदेसवा ।

फोनवो से बतिया आउर डहकावे
सारी– सारी रतिया निनियो ना आवे,
गोदिया सुसके ललनवा हो रामा
गइले बिदेसवा ।

❑❑

❍ देवताल 5 पिप्राढ़ी, बारा, नेपाल

## सुनीं मोरे रामजी

**गीता चौबे गूँज**

बीत गइले फागुन महीनवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी।
कहिया ले होइहें गवनवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी ।।

बिटिया के सखी सभ गइली ससुरवा
केहू नाहीं लउकली घरवा–दुआरवा
सून भइले गाँव के इनारवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी ।

पइसा उधार ले के कइनी बियाहवा
बंधक रखी दीहनी खेतवा–बधारवा,
तब हूँ ना पूरेला दहेजवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी।

मथवा प हाथ धइले बाबा दुआरवा
कुफुत में बइठल बाड़ी आम्मा अंगनवा,
धियवा भइली दुसमनवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी ।

आम मोजरइले त कूहके कोइलिया,
पिया बिनु नइहर में धियवा जोगिनिया
देखी–देखी फाटेला करेजवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी

बीत गइले फागुन महीनवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी ।
कहिया ले होइहें गवनवा हो रामा,
सुनीं मोरे रामजी ।।

❑❑

❍ बेंगलुरु, कर्नाटक

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

# जिनिगी के छंद में आनंद भरि आइल रामा,चइत महीनवा

कनक किशोर

अइसे साल के बारहो महीना के आपन महत्व होला बाकिर साल के अंतिम महीना फागुन आ पहिला महीना चइत के रंग – राग आ महातम अनोखा बा।इहे देखि कहल जाला कि साल में से ई दूगो महीना फागुन आ चइत के निकाल देल जाय त साल में कुछ बचबे ना करी। फागुन आ चइत ना रहित त लोक जीवन में रस रहबे ना करित। फागुन के होली, फगुआ आ चौताल आ चइत के चइता, चौती आ घाटों के गूंज से भक्ति आ भौतिक दूनों रस के संचार लोक में होला।

रस की अनुभूति के लोक जीवन में महता पर साहित्य दर्पण ३.२.३ में उद्धरित तथ्य बिचार जोग बा।

सत्त्वोद्रेकादखंड–स्वप्रकाशानंद–चिन्मयः
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः ।
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः
स्वाकारवदभिन्नत्वे नायमास्वाद्यते रसः।
(साहित्यदर्पण ३.२.३)

''' कहे के माने रस के आविर्भाव सत्त्व गुण के उत्पन होखे के स्थिति में होला। सांसारिक राग–द्वेष से मुक्त चित्त की विशुद्धता, निर्बन्धता के स्थिति होला। ई आस्वाद इन्द्रिय उत्तेजना से भिन्न परिष्कृत–चित्त ग्रहण करेला। रजोगुण आ तमोगुण के संस्पर्श होला त रसानुभूति ना होला, काहे कि रस हृदय के मुक्तावस्था ह। दूसर बात रस आत्मतत्त्व के आस्वाद ह। तीसर बात रस पूर्ण आ अखण्ड ह। रस तन्मयी–भाव के स्थिति ह। रस स्वप्रकाशानन्द ह, चिन्मय ह, आनन्दमयी–चेतना ह। विषयानन्द से विलक्षण ह। अनिर्वचनीय आ अलौकिक ह। अलौकिक एह अर्थ में कि ऊ नित्य आ शाश्वत ह '।

रस ऊ आनंद के स्रोत है लोक जीवन में कि रस ना रही त मुक्ति ना मिली। मुक्ति खातिर भोजपुरिया लोक भक्ति आ कर्म के पथ जानेला। ज्ञान के बात ना बुझाय जल्दी से ओकरा। पेट भरल रहेला तब जाके कवनो चीज में रस आवेला। पेट भरे खातिर कर्म कइल जरूरी होला। भोजपुरिया समाज कर्म के महातम जानेला आ कर्म के पूजा समझेला। शिव आ राम एह समाज के इष्ट देव ह लोग।साल के अंत में अगजा के साथे दुख दरिदर के जारि अमीर – गरीब सभे फगुआ खेलि आपन खुशी के इजहार करत आधे राति खा नया बरिस के स्वागत करत चइता उठा सब इष्ट देव आ देवी लोग के गोहरावत आपन अनुनय – विनय सुना देला। अइसन लोक संस्कृति के उदेस लोक जीवन में रसे घोरल नू ह। भोजपुरिया समाज माटी के लाल ह आ चइत में रबी फसल खरिहाने आ जाला जे किसानी जीवन के कर्म फल ह। आपन कर्म फल के देखि केकरो मन में खुशी होला आ लोक में खुशी के इजहार नाचि आ गाइये के कइल जाला।

'' 'जइसे स्वरलहरी में राग ह ओसहीं नृत्य देहराग ह। अंग–प्रत्यंग आनन्द के लहर भर जाला। नृत्य आनन्द के देहगत छलकन ह । प्रेम के अतिशय राग। नृत्य आनन्द ह , ओकरा कवनो व्याख्या के जरूरत नइखे। सामान्य नर–नारी जीवन के अलभ्यलाभ नृत्य में पा जाले '। चइत के झकोर संगे हवा, पानी, प्रकृति नाच उठले त बताई मनई कइसे रोके अपना के नाचे – गावे से। चइत उम्मीद के महीना ह लोक में। अगहन के करार ना पूरा होखेला त चइते के आसरा रहेला किसान आ किसानीन दूनों के, किसान के माथे करजा के त किसानीन के आपन झुलनी – लुगा – गहना के। फागुन में रंग बरसला त चूनर वाली भींजेली बाकिर चइत में रस के फुहार बरिसेला,आम के मंजर महकेला आ महुआ से मदन रस टपकेला तो मादकता अइसन छा जाला कि मय नर – नारी नाचे – गावे लागेला। आनंद छलकि बोलेला कि–

रस रसे रसे बरिसे चइतवा में
आम मंजर रस, महुआ मदन रस
हउवो में एगो रस,पनियो में एगो रस
राम रस, देवी रस, भक्ति भरल रस
नाचे मोर मनवा चइतवा में।

**मइया झुलेली झुलनवा नीमिया गछिया ना**

भोजपुरिया समाज में नवमी के पुजाई के बड़ा महातम बा। अइसे साल में चार गो नवरात्र बाकिर हमनी किहां चैत्र नवरात्र के पुजाई बड़ी धूमधाम से मनावल जाला । लोक मान्यता बा कि नवमी के माई अपना भक्तन के घरे जाली।चइत नवमी से भगवान रामो के खास संबंध बा।चइत शुक्ल पख के नवमी के भगवान राम जन्म लेले रहन।तबे से ई

पर्व रामनवमी के नाम से जानल जाला ।माने माई आ भगवान राम के पूजा चइते में होला।राम भक्त हनुमानो के महबीरी झंडा ओहि नवमी के दिन आँगन में बदलल जाला।

भगवान राम के जन्म चइत में भइल रहे त एह से कहल जाला कि चइता गायन के शुरआत त्रेतायुग में भइल रहे आ चइता में ' हो रामा ' भा ' ए रामा ' के टेक लगा के गावल जाला।राम जन्म, राम सीता के होली आ उन्हिन लोगिन के बिआह से संबन्धित चइता खूब गावल जाला। अइसे चइता के विषय– वस्तु काफी व्यापक बा। चइता में भक्ति, सिंगार, प्रकृति, गृहस्थ जीवन के हर रंग देखे के मिलेला आ ई उत्तरप्रदेश आ बिहार के प्रचलित लोक गायन ह।

**राम जन्म से संबंधित एगो चइता –**

जाग गइले कौशल्या के भाग हो रामा ।
अवध नगरिया।।
माता कौशल्या लेत बलइया
धन राजा दशरथ के भाग हो रामा।
अवध नगरिया ।।
घर–घर बाजत लला के बधइया।
शोभा वरन ना जाए हो रामा
चौत राम नवमिया।।

**राम – सिया बिआह संबंधित एगो चइता –**

विराजत राम सिय साथे हो रामा
अवध नगरिया।
माता कौशल्या तिलक लगावे
सुमित्रा के हाथ सोहे पनवा हो रामा
अवध नगरिया ।।
चलऽ सखी चलऽ दरसन करि आवे
मिले आनंद अपार हो रामा
राजा दशरथ दुअरिया।।

**शक्तिरूपा देवी माई संबंधित चइता –**

रामऽ बाजेला बाजनवाँ, दू गोला मैदनवां ए रामा।
सिंह चढ़ी, माई आके देदऽ दरसनवां ए रामा।।
माई आके!

बनारस के संगीत घराना चइता– चैती के एगो उपशास्त्रीय गायन के रूप में विकसित कर के ओकरा के नया रूप देले बा। उपशास्त्रीय गायन के ठुमरी आ चैती में भावाभिव्यक्ति के मामला में काफी समानता पावल जाला।
पिया पिया रटतऽ पियर भइले देहिया हो रामा

सिंगार के भावना मनुष्य में स्वाभाविक रूप से पावल जाला एही से सिंगार गायन के चलन रहल बा समाज में। बसंत में काम चरमोत्कर्ष पर रहेला। प्रकृति खुद दुल्हन जस सज जाले आ ओह प पुरवइया बयार के मादकता आगि में घीव के काम करेला।चइत में वियोग ना सहन होखे, प्रेम में मदमस्त मन पिया के इयाद में अइसन डूबल रहेला कि प्रिय भा प्रियतमा के वियोग में देह के पियरी ध ार लेला तब नू चइत के उत्पाती महीना के संज्ञा देल गइल बा।

**एगो सिंगारिक चइता देखीं**

एहि ठइयां नथिया हेरा गइल रामा
कहवाँ हम ढूंढ़ी।
अंगना में ढूंढनी अटरियां पे ढूंढनी
ढूंढत–ढूंढत बउराय गइलीं रामा कहवाँ हम ढूंढी।
तिरछी नजरिया से सइया जी से पुछनी
सेजिया पे नथिया हम पाइ गइली रामा,
अब नाही ढूंढूं।

**एगो दूसर सिंगारिक चइता –**

झुलनी में लागल नजरिया हो रामा
अब ना पहिरबऽ ।
झुलनी पहिर हम गइनी बजरिआ
लोगवा नजरिआ लगावे हो रामा
अब ना पहिरबऽ।।

**चइत काहे उत्पाती ए रामा**

चइत मासे कुहुंके बगिया कोइलिया ए रामा
कोइली के बोली सुनि उठेला दरदिया
पिया परदेसिया बुझे ना मरमिया ए रामा
चइत मासे.....।

भोरे भोर कोइलर,सांझि खा ननदी गाभी
रतिया में पुरवा बयार रे
अंगे अंग डहकत बिरह के आगि सखी
सेजिया पर लोटीं जइसे नागिन ए रामा
चइत मासे.....।

काठ के करेजा करी फागुन बितवनीं
चइत के धाह ना सहाय
पियवा अनाड़ी नोकरिये के सब बुझे
चइत के चढ़ल बा खुमारी ए रामा
चइत मासे.....।

नाही अइले पियवा ना भेजले सनेसवा
झर झर बहेला आँखि के कजरवा
तन नाही बस में आ मनवा बा मातल
चइत बड़ा उत्पतिया ए रामा
चइत मासे..... ।

टेसू के चम्पई, सेमल अउर गुलमोहर के ललाई, अमलतास के पियरई, महुआ के मादकता, आम मंजर से टपकत मदन रस, सरई के फूल के सुंदरता अउर सरई बन के हरियरी से सजल चइत अपना रूप पर इतरा उत्पाती हो जाला त एह में ओकर का दोष? आ प्रौढ़ बसंत के रंग – बिरंगी चइत के देखि मनई के मन उत्पाती हो जाला त चइत के दोष ना नू दिआई।चइत के उत्पातो मनई आ प्रकृति दूनों के एही से खूब भावेला

डॉ सुनील कुमार पाठक कहले कि ' लोकगीतन के जेतना ले विभेद बा ओ में चैता ले जादा मधुरता, सरसता, कोमलता आ भावप्रणवता कवनो दोसर शैली में ना मिली '। चइत के गंध परिवेश से आवेला। हमरा त स्मृतियन में बसल बा। स्मृतियन में गूंजे लागेला चइता के बोल। चइत मास बोले ले कोयलिया हो रामा. पिया के अंगनवा। चइत के ई उल्लास गूंजत रहेला भीतरे। गूंजेला त मन कह उठेला –

गजल कहलस कि फागुन ह, लगा द रंग माथे पर
आइल चइत,गावऽ चइता, अभी मधुमास बाकी बा।

कोइलि बाग में कुहुंके, बधारि सोना जस चमके
मदन रस आम से टपके, अभी मधुमास बाकी बा।

मादक गंध महुआ के, बिखरल आज बा चहुंओर
मनवा मीत खोजत बा, अभी मधुमास बाकी बा।

चइता रोज गूंजता , दुआरे पर, शिवाला पर
ननदी प्रेम गीत गावे , अभी मधुमास बाकी बा।

कहीं सेमल फुलाइल बा,कहीं पलाश बा महकत
चुरा लीं मन करे लाली, अभी मधुमास बाकी बा।

चढ़ल पीपर नया पतई,सखुआ खूब फुलाइल बा
जंगल बोल रहल बाटे, अभी मधुमास बाकी बा।

किशोर कह रहल अनुभव,बसंत के रंग बाकी बा
गोरी राह निरखत यार, अभी मधुमास बाकी बा।

चइता, चैती और घाटों के गायन चहुंओर हवा में घुल–मिल के गूंजेला चइत में। चइत मासे, चिद् – चेतना में गति आइल हो रामा, चइत मासे– चइता के बोल भक्ति में डूबल लोक मानस के हाल बतावत बा।चइत में भक्ति आ सिंगार में डूबल लोक के देखि, चइत के भक्ति आ सिंगार के समरसता के बहत बयार के देखि कहल जा सकेला कि रस आ आनंद में डूबल मनई के मन के अध्यात्मिक आ भौतिक उड़ान के कवनो सीमा में बान्हल ना जा सके चइत मास में। इहे देखि केहू कहले होई कि ' जिंदगी के छंद में आनंद भरि आइल रामा,चइत महीनवा '।।मेहर के आंचर के छोर, आँखिन के लोर आ चइत के झकोर देखि पिया के देर – सबेर जागिये जइहें, चलीं जा हमनी के राम लल्ला आ देवी माई के गोहराई के मनाईं जा।

('' श्री राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी के फेस बुक वाल के आलेख से।)

❑❑

❍ राँची, झारखंड
चलभाष – 9102246536

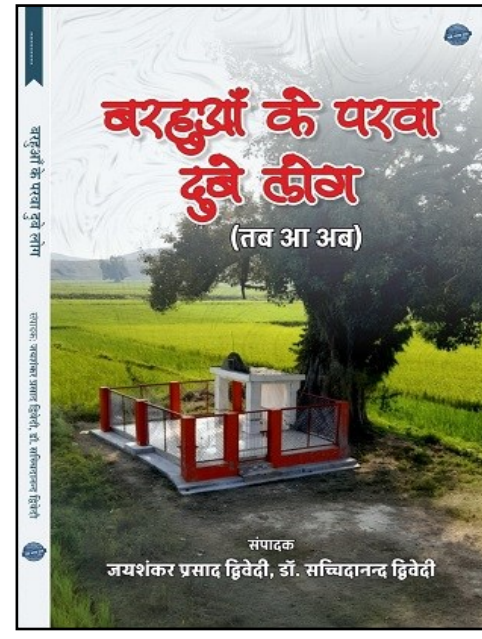

# तीन गो चइता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

## सिकड़िया बाजल

आपन राम अइलें दुअरिया हो रामा,
सिकड़िया बाजल।
खोलऽ अम्मा बजर केवड़िया हो रामा,
सिकड़िया बाजल।।

हकसल होइहें पियासल होइहें
रउरा दरस ला तरासल होइहें
खोलिके लेआवहु न भितरिया हो रामा,
सिकड़िया बाजल।।

हाथ फरिछावहु, मुँह फरिछावहु
ठहर बइठाई, दही मिसिरी मँगावहु
मंगल मनावहु न महलिया हो रामा,
सिकड़िया बाजल।।

गोतिनि बोलावहु, ननदी बोलावहु
पलंग बइठाई सभे नेग लुटावहु
आज नचावहु न पतुरिया हो रामा,
सिकड़िया बाजल।।

खोलऽ अम्मा बजर केवड़िया हो रामा,
सिकड़िया बाजल।।

❑❑

## चइत चितचोरवा

बिरहा के नाद सुनावे हो रामा
चइत चितचोरवा।

कोइली के बोलिया करत ठिठोलिया
सून लागे अँगना आ सून महलिया
ननदी क मुसुकी रिगावे हो रामा,
चइत चितचोरवा।

सुधिया के खोरिया तातल दुपहरिया
हियरा जरावेले टह टह अँजोरिया
ई बाति मनवा न भावे हो रामा,
चइत चितचोरवा।

पपिहा क पिऊ पिऊ लगेला सँसतिया
जिनगी जियान होत लागे न जुगतिया
बयरिया झुरकि दुलरावे हो रामा,
चइत चितचोरवा।

❑❑

## करिखा पोतइलें

कुरसी के महूरत न भेंटइलें हो रामा,
करिखा पोतइलें।

तब नाही बुझनी माई मोर बतिया
कुरसी पठवनी दोसरा के सेतिहा
बनलो भाग आगी जरी गइलें हो रामा,
करिखा पोतइलें।

बोलिला दूसर बोला जाला दूसर
सभही कहेला अब घूमी ना मूसर
भदरा मोरे भागे घहरइलें हो रामा,
करिखा पोतइलें।

सभका हुलासे दुअरो अगराइल
हमरा एकहू न लगन भेंटाइल
लोकतंतर के डंका पिटइलें हो रामा,
करिखा पोतइलें।

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

# चैता गीतन के रूचि आ स्वाव

डॉ. सुनील कुमार पाठक

''भर फागुन ना रंग चढ़ल तऽ
चईती पित्त लहर मारी
मन के भाव भरी ना जबले
पसरत रही जहर भारी।''

(हरेन्द्र हिमकर)

X X X

''गोरी हरके जाये में महुआरी
चइत मासे।
फागुन के चूकल
देवर दागा दीही।''

('नेवान' के एगो ताँका–'चइत'–सुनील कुमार पाठक)

भोजपुरी काव्य भा लोकगीत प्रकृति के साथे–साथे बराबरे विचरल–विहरल बा। गाँव–जिरात आ खेत–खलिहान में बोलल–बतिआवल जाये वाली बानी आखिर प्रकृति के साथे आपन इयारी प्रगाढ़ ना राखी तऽ का ककरीट के जंगल में बिजली रानी के चकमक झालर ओढ़ले गुमान करे वाली कवनो खडिहा भाषा के थोड़े एमें सकान बा। भोजपुरी के गीतन में फागुन महीना के मस्ती आ रंगीनी तऽ बड़ले बा ओ. करा बाद आनेवाला चैत महीना के रसगर अभिव्यंजनो खूब भइल बा। चैत कृष्ण–प्रतिपदा यानी होली के राते से फगुआ गवला के बाद चौता गान शुरू हो जाला। चैत के महीना में गावल जाये के कारण एह गायन–शैली भा लोकगीतन के 'चैता' भा 'चैती' नाम पड़ल। अइसे तऽ चैती गीतन के नींव वसन्त के आगमे के साथे पड़ जाला बाकिर चैत महीना के पहिले 'चैती' गावे के कवनो गंभीर परम्परा देखे के नइखे मिलत। वसन्त के बहार पूरा चैत महीना भर बनल रहेला। बसन्त में 'चैता' के गायन बड़ा आनन्ददायी होला। नदी के किनार होखे भा अमवारी के शीतल छाँव में पुरवैया के सिसकन, मन्दिर–मठिया के अँगनई होखे भा बह्म बाबा के चबूतरा– हर जगे मस्त भोजपुरिहा चैता गावे में मगन दिखेला लोग।

लोकगीतन के जेतना ले विभेद बा ओमें 'चैता' ले जादा मधुरता, सरसता, कोमलता आ भावप्रणवता कवनो दोसर शैली में ना मिली। 'सोहर' आ 'जँतसारो' में 'एको रसः करूण एव' के महनीयता हियरा के गहिराई ले छूअेवाली बा बाकिर 'चैती' के सरसता में घुलल मानव–मन के जवन तरलता, उछाह, बाँकपन, भंगिमा आ वियोगजनित विरह–भावना बा, ऊ कहीं ना मिली।

महाकवि कालिदास आपन महान काव्य–कृति ''ऋतुसंहार' में लिखले बाड़ें–

''आलम्बिहेमरसनाः स्तनसक्तहारा
कंदर्पदर्प शिथिलीकृतगात्रयष्टयः
मासे मधौ मधुकोकिलभृंगनादैः
नार्यो हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम्।''

('ऋतु संहार'– 6/26)

अर्थात् 'चैत में जब कोइल कूके लागेली, भौंरा गुंजार करे लागेला ओह समय कमर में सोना के करघनी पेन्हले, स्तन पर मोतिन के हार लटकवले, कामोत्तेजना से शिथिल पड़ल शरीरवाली नायिका भरपूर बल से मन के अपना ओरि खींचेले।'

रीतिकालीन कवि बिहारीलाल के एगो दोहो देखे लायेक बा जवना में चैत के चाँदनी से उत्पन्न विरह–वेदना के चित्रण करत ऊ लिखले बाड़ें–

''भौ यह ऐसोई समौ जहाँ सुखद दुःख देत
चैत चाँद की चाँदनी डारत किये अचेत।''

'पदमावत' में जायसी चैत मास में विरहिणी के मुख से कहलवले बाड़न–

''चैत वसन्ता होय धमारी
मोहि लेखें संसार उजारी
पंचम विरह पंच सरमारै
रकत रोइ सगरो वन ठारै
बूड़ि उठे सब तरूवर पाता
भीज मजीठ टेसू वनराता।''

–आशय ई कि 'चैत मास में धमाल मचल बा, लेकिन हमरा खातिर संसारे जइसे उजड़ गइल होखे। पंचम राग के विरह–स्वर 'पिउ–पिउ' के जरिये कोइल जइसे 'पंचबान' चलावत होखस। खून के आँसू से जइसे पूरा जंगले पाट गइल होखे। खून के एह लाली में डूब के वृक्षन के सगरी पत्ती ताम्बई रंग के हो गइल बाड़ी सन। मजीठ ओही से भींग गइल बा आ वन–टेसूओ ओही से लाल हो चलल बा।'

'चैती' गीतन के भावाभिव्यंजना में लाक्षणिकता आ बिम्बात्मकता के भरमार बा। एगो 'चैती' में लक्षणा शक्ति के चमत्कार देखे लायक बा–

''चइता मास जोबना फुलाइल हो रामा
कि सइयाँ नहिं आएल।''

–एजवा 'जोबना' के साथ 'फुलाइल' के प्रयोग एकदम सटीक, भावाभिव्यंजक आ उद्दीपक बा।

अइसहीं व्यंजना शक्ति से परिपूर्ण आ ध्वनि काव्य के उत्कृष्ट नमूना के तौर पर एगो 'चैती' के एह पंक्तियन के देखल जा सकत बा–

''बैंगन तोड़े गइनीं ओही बैंगनबरिया
गड़ि गइल छतिया में काँट हो रामा।''

–एह गीत में छाती में काँट गड़ला के मतलब विरह–वेदना के तीव्रता से बा।

एगो चैता में 'चैत' महीना के 'उत्पाती' कह के सम्बोधित कइल गइल बा आ 'नींद' के बैरिन बतावल गइल बा–

''रामा चइत के निंदिया बड़ी बइरिनिया हो रामा
सुतलो बलमुआ नहिं जागे हो रामा।''

–प्रियतम खारित 'मानिक' के रूपक–रचाव में अनुपम कवित्व के दर्शन होत बा–

''आहो रामा मानिक हमरो हेरइले हो रामा,
जमुना में
केहू नाहीं खोजेला हमरो पदारथ,
जमुना में।''

–'चैती' गीतन में विप्रलंभ श्रृंगार आ करूण रस के अइसन उद्रेक देखे के मिलत बा कि एकर काव्यात्मक सौन्दर्य पर मन रिझ–रिझ जात बा। एगो 'चैती' के उदाहरण देखे लायक बा–

''चैत फूले वन टेसुल ऊधो
भँवरा पइठि रस लेइ
का भँवरा तू लोटापोटा
काहे दरद मोहि देइ।''

–चैत महीना में वन में टेसू फुलाइल बा। आसरा जोहत वियोगजनित दुःख में रोअत–रोअत नायिका के आँखे पर खतरा मँडराये लागल बा। फूलन पर भँवरा के लोट–पोट देखि नायिका के हियरो में दरद उपटि गइल बा।

एगो दोसर 'चैती' गीत में मुग्धा नायिका फूल चुनत–चुनत कल्पना में एतना रम जात बिया कि अप. ना देह के चुनरी आ अपना पिया के पगड़ी के रंग में एकरूपता के चाह ओकरा हियरा में जाग जात बा–

''कुसुमी लोढ़न हम जाएब हो रामा
राजा के बगिया
मोर चुनरिया सैंया तोर पगड़िया
एकहिं रंग रंगाएब हो रामा।''

–एगो विरहिणी अपना प्रियतम के स्मरण में एतना तल्लीन बिया कि ओकरा कोइली के बोली बहुते बाउर लागत बा आ ऊ बहेलिया से ओकरा के मार गिरावे खारित पाँव–पकड़ऊवल करे लागत बिया–

''आहो रामा गोड़ तोर लागेली
बाबा के बहेलिया हो रामा
बिरही कोइलिया मारि ले आऊ हो रामा।''

## –ननद–भौजाई के हठी ठिठोली

भोजपुरिहे ना हर भारतीय समाज में बराबरे रहल बा। भौजाई लोग ननद के आचरन के हीनाई आ ओकरा प्रति आपन आशंका कबो तऽ ओह लोग के सावधान करे के नीयत से तऽ कबो परिवार में आपन वर्चस्व कायम करे के लिहाजन करेला लोग। भोजपुरी लोकगीतन में ननद–भौजाई के प्रेम आ एक दोसरा के प्रति नाराजगी आ उलाहना –दूनू के बड़ी मजिगर वर्णन देखे के मिलेला।

''आहो रामा हम तोसे पूछेलीं
ननदी सुलोचनी हो रामा
तोहरे पिठिया,
धुरिया कइसे लागल हो रामा, तोहरे पिठिया
आहो रामा बाबा के दुअरवा
नाचेला नेटुअवा हो रामा
भितिया सटल धुरिया लागल हो रामा,
भितिया सटल।''

–एह चैती गीत में ननद–भौजी के संवाद में भौजाई के सवाल पर ननद के चतुराई भरल जबाब एह क्षेत्र के वाक–चातुरी, कथन–भंगिमा आ वाग्विलास के झलकावे खारित पर्याप्त बा।

चैत महीने में साँझ में चौका–चुहानी के गरमी झेलला के बाद, भोरे–भोरे के पुरूआ बेयार के झिहिर–झिहिर बहाव में सूतल नींन से काँचे जगा दिहला पर नायिका अपना सखि पर झल्ला उठत बिया–

''सुतला में काहेला जगवलऽ हो रामा,
भोरे–ही–भोरे
रस के सपनवा में हई अँखिया डूबल
अंग ही अंग अलसाये हो रामा।''

–एगो 'चैती' में संयोग श्रृंगार के वर्णन में अइसन मादकता बा कि एह गीत–शैली के अनुपम भावाभिव्यक्ति पर हर रसिक का लूट–लोट जाए

के मन करे लागत बा–

*''एही ठैंया झुलनीं हेराइल हो रामा, एही ठैंया*
*घरवा में खोजलीं, दुअरा पे खोजलीं*
*खोजि अइलीं सैंया के सेजरिया हो रामा।''*

–फागुन के रंगभरी पिचकारियो नायिका अप. ना प्रियतम पर नइखे चला पवले आ अब देखते–देखते चैतो बीते पर आ गइल। नायिका के सुर में तल्खी देखे लायेक बा–

*''चैत बीत जाई हो रामा*
*तब पिया का करे अइहें?''*

–चैती गीतन में आम तौर पर मुक्तक काव्य के आनन्द मिलेला बाकिर कवनो–कवनो गीतन में प्रचलित कथा के जरिये आ कहीं–कहीं कथा गढ़ियो के अइसन कथा–वितान तइयार कइल गइल बा कि ओहमें 'प्रबंधकाव्य के मार्मिक स्थलन के पहिचान' नियन रसपेशलता आ गइल बा। 'रामायण' के प्रचलित कथा पर आधारित एगो 'चैती' में कैकेयी के प्रति उपालंभ के स्वर बहुते सजोर बा–

*''रामजी के बनवा पेठौलऽ हो रामा*
*कठिन तोरा जियरा*
*मरियो न गइली केकई निरदइया*
*जारे मुख कठिन बचनवा हो रामा*
*कठिन तोरा जियरा।''*

–एगो दोसर 'चैती' में नायिका नदी के एह पार सुरूजदेव के अरघ देत बिया तबले ओह पार धूनी रमवले एगो जवान जोगी पर ओकर नजर पड़त बा। दूनू के आँख चार होत बाड़ी सन। संजोग से ऊ नवजवान एह नायिका के प्रियतमे निकलत बा जवन जोग रमावे बदे एकरा से बिछुड़ भाग चलल बा। नायिका के सुरूजदेव के पूजा–आराधना सफल होत बिया आ परिणामस्वरूप नायिका पर नजर पड़ते ओह जोगियो के हियरा में प्रीति के हिलोर उठे लागत बा। दूनू में एक दोसरा खातिर बरिसन से बसल सनेह जाग उठल बा। एह कथा–विधान के जरिये चैती गीत में प्रेम के मर्यादा के जोगावत एके गीत में विरह के आतुरता आ स्नेह के जुड़ाव के चलते संयोग श्रृंगार के वर्णन –दूनू देखे लायेक बा–

*''रामा ओही पार जोगिया धुनिया रमावे हो रामा*
*एही पारे साँवरि सुरूज मनावे हो रामा, एही पारे*
*रामा जोगिया के टूटेला जोगवा हो रामा*
*साँवरो के जूटेला जनम सनेहिया हो रामा,*
*साँवरो के।''*

–'चैती' गीतन में खाली संयोग श्रृंगार भा विप्रलंभ श्रृंगार के वर्णने नइखे, एमें प्रखर सामाजिक चेतनो के पइसार देखे के मिलत बा। विद्यापति ('पिया मोरे बालक हम तरूनी गे') भा भिखारी ठाकुर ('चलनी के चालल दुलहा, सूप के झटकारल हें') में 'अनमोल विवाह' के सामाजिक विसंगति के प्रति जवन प्रतिरोध के स्वर देखे के मिलत बा ओकर पूर्वाभास 'चैती' के एह गीतन में पावल जा सकत बा–

*''रामा छोटका बलमुआ बड़ा नीक लागे हो रामा*
*अँचरा ओढ़ाई सुलाइबि भरि कोरवा हो रामा,*
*अँचरा ओढ़ाई*
*रामा करवा फेरत पछुअवा गड़ि गइले हो रामा*
*सुसुकि सुसुकि रोवे सिरहनवा हो रामा,*
*सुसुकि सुसुकि।''*

एगो 'चैती' गीत में नायिका के कमसीनी के कारण ओकरा गवने रह गइला के चलते नायक बंगाल चल गइल बा। जल्दी जब लवटत नइखे तऽ नायिका घबरा जात बिया। साथे के बिआहल सखि सबके गोदी में सुगना बलकवा खेले लायेक हो गइल बा आ नायिका के गोद अभी सूने बा। चंचल चैत के दुआरी पधारते ऊ बेचैन हो जात बिया। ओकरा मन में आशंका उठे लागत बा कि कहीं ओकरा प्रियतम बंगालिन जादूगरनी सुन्दरी सब पर तऽ नइखे लुभा गइल–

*''रामा पूरब देसवा में बसे बंगलिनिया हो रामा*
*हरि लीन्हें तोर मन सुरति देखाइ हो रामा*
*रामा बारहो बरिस पर चिठियो न भेजे हो रामा*
*कइसे काटबि चइत दिन चंचल हो रामा।''*

चैती गीतन के कथा में देवी–देवता के कथा आ धार्मिक बातनो के उल्लेख भइल बा। एगो चैती गीत–कथा में शिव–पार्वती के सुन्दर संवाद देखते बनत बा। शिवजी भाँग–धतूरा ले आइल बाड़ें, पार्वती जी के पीसे के कहत बाड़ें। पार्वती जी कहत बाड़ी– 'हमरा गोदी में गणेश जी बाड़ें, कइसे पीस दीं?' शिवजी कहत बाड़ें– 'पलंग पर सुता दऽ बाकिर गोला तइयार करऽ।' भोला बाबा गोला खाके उन्मत हो जात बाड़ें–

*''रामा सिव बाबा गइले उतरी जंगलिया हो रामा*
*लेई अइले, भँगिया धतुरवा हो रामा, लेइ अइले*

*रामा होत भिनुसरवा सिवजी जगावसु हो रामा*
*उठु गउरा, भंगिया रगरि ले आव हो रामा,*
*उठु गउरा।''*

–एगो चैती में एगो गोपी के साथे कृष्ण के मनुहार देखे लायक बा–
''रामा छोटी मुकि ग्वालिनि अँगिया की पातरि
हो रामा
चलि भइली गोकुला नगरिया दहिया बेचन
हो रामा, चलि भइली
रामा गोकुला मथुरवा के साँकरि गलिया हो रामा
ताहि बीचे, कान्हा धरे मारे अँचरा
हो रामा, ताहि बीचे।''

–एगो चैती में जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर के जन्म–प्रसंगो के उल्लेख देखे लायेक बा–
*''जनमे त्रिशला के ललना, कुंडलपुर के भवना*
*हो चान सुरूजवा उतर आये री*
*चैत महिनवाँ के पाख अँजोरिया*
*भरि गइले मैया के सून रे गोदिया*
*भइल धरती अकसवा में अइसन हुलसवा*
*कि बगियन फुलवा महक आये री।''*

–संत कबीरदास चैती शैली के अपना एगो पद में निर्गुण ब्रह्म के गोहरावत कहत बाड़ें–
*''पिया से मिलन हम जायेब हो रामा*
*अतलस लँहगा कुसुम रंग सारी*
*पहिर पहिर गुन गाएब हो रामा।''*

–कबीरदास, धर्मदास, दरिया साहब, यारी साहब आदि के पदन में चैती शैली के पद बढ़िया उतरल बाड़े सन। दरिया साहेब (सन 1731) के एगो निर्गुनिया घाँटो शैली के 'चैता' में शरीर रूपी नगर, दुष्टबुद्धि माया, वासना के शराब, आ सतगुरू के उपदेस के वर्णन देखे लायेक बा–

*''कुबुधि कलवारिनि बसेले नगरिया हो रे*
*उन्हक मोरे मनुआँ मतावल हो रे।*
*भूलि गैले पिया पंथवा दृस्टिया हो रहे*
*अवघट परलीं भुलाए हो रे।*
*भवजल नदिया भेआवन हो रे।*
*कवने के विधि उतरब पार हो रे।*

*दरिया साहब गुन गावल हो रे*
*सतगुर सब्द सजीवन पावल रे।''*

–भोजपुरी में श्री केवल जी के 'चैता' बड़ी मशहूर बाड़े सन। एगो चैता में श्री केवल जी भोले शंकर के अद्भुत रूप–वर्णन प्रस्तुत कइले बाड़ें–

*''भोला त्रिपुरारी भइले मतवलवा हो रामा*
*अरे जेही के सीस पर गंग बिराजे*
*सोहेला चन्द्र भालवा हो रामा*
*कि सेई भोला हो पहिरे मुण्ड मालवा हो रामा*
*अरे जोगी बीन बजावे गावे आरे भूतवा हो रामा*
*कि केवल डरपि गये भोला सरनवा हो रामा।''*

–चैती गीतन में प्रायः ओकरा रचयिता के नाम ना मिले बाकिर बुलाकीदास के 'चैती घाँटो' खूब प्रसिद्ध बा। बुलाकी दास के नाम बुल्ला साहब आ उनकरा बीबी के नाम कुन्दकुँवरि बतावल जाला–

*''दास बुलाकी चइत घाँटो गावे हो रामा*
*गाइ गाइ, कुन्दकुँवरि समुझावे हो रामा, गाइ–गाइ।''*

1946 के लगभग के पटना के एगो उर्दू कवि सैयद अली मुहम्मद 'शाद' के उल्लेख मिलत बा जेकर किताब 'फिकरे वलीग' में एगो चैती गीत उपलब्ध बा–

*''काहे अइसन हरजाई हो रामा*
*तोरे जुलुमी नयना तरसाई हो रामा।''*

संत कवि केसोदास (सन 1840) के चैती–गीतनो में निर्गुन भक्ति के दरसन होत बा। 19वीं सदी के अंत में सारन के बिजईपुर के कवि सुरूजमल के चैती रचना में कुछ नया तरे के भावाभिव्यंजना देखे के मिलत बा–

*''सपना देखिला बलखनवाँ हो रामा*
*कि सैंया के अवनवाँ*
*'सुरूज' चाहेले गरवा लगावल*
*कि खुलि गइले पलक पपनवाँ हो रामा।''*

–बनारसी कवि देवीदास अपना 'बाँका छबीला गवैया' नामक पुस्तक में चैत के गरमी में विरह–वेदना के असह्य भइला के वर्णन बा–

*''नाजुक बलमा रे रतिया नहिं आवे हो रामा*
*एक त तोरी चढ़ली जवानी*
*दूजे बिरहा सतावे हो रामा*
*चैतवा की गरमी निंदिया न आवे हो रामा।''*

पुरनका शाहाबाद जिला के राजकुमारी सखि धनवान देस भा क्षेत्र में बिआह ना करे खातिर बरजत एगो चैती गीत में लिखत बाड़ी–

*''गोड़ तोही लागेले बाबा हो बढ़इता*
*से आहो रामा*
*धनवाँ मुलुक जनि ब्याह हो रामा*
*सासु मोरा मरिहें गोतिनि गरिअइहें हो रामा*
*लहुरी ननदिया ताना मरिहें आहो रामा।''*

–मैथिली के भक्त कवि गोपीनाथ जी के चैती गीतन में भक्ति भावना के प्रबलता बा। भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका, बज्जिका, अवधी, ब्रजी –हर लोक भाषा क्षेत्र में चैती शैली में खूब गीत लिखाइल बा।

–चैती शैली के गीतन के आम तौर पर तीन प्रकार बतावल गइल बा– 1- साधारण चैती 2- लकुटिया चैती 3- घाँटो चैती। साधारण चैती में प्रायः एके गो गायक ढोलक, तबला, हारमोनियम आदि वाद्यन के जरिये चैती गावेला। साधारण चैती के खड़ी चैती, निर्गुण चैती आ झूमर चैती तीन गो उपभेद बतावल गइल बा। झलकुटिया चैती में सामूहिक चैती–गायन होला। पहिला दल एक पंक्ति तऽ दोसर दल ओकरा टेक पद के जोर से दोहरावेला। 'झलकुटिया' चैती सामूहिक रूप से झाल कूटके भा बजाके गावल जाला। उदाहरण दे खल जा सकत बा–

**पहिलादल–** रामा चइत की निंदिया बड़ी बहूरिनिया
**दोसर दल–** हो रामा सुतल बलमुआ
**पहिला दल** –नाहीं जागे हो रामा
**दोसर दल**– सुतलो बलमुआ।

–एह चैती में कहीं–कहीं खँजरी के प्रयोगो होला जवना चलते एकरा 'खँजरिया चैती' भी कहल जाला। 'घाँटो चैती' के डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय चैतिये के एगो रूप मनले बानीं, उहाँ के एकरा के स्वतंत्र गीत–गायन–शैली माने के पक्ष में नइखीं। आपन ग्रंथ 'भोजपुरी लोक साहित्य' में उहा ँके कहनाम बा– ''कुछ लोग चैता और घाँटो में अन्तर मानते हैं परन्तु हमारी सम्मति में चैता के ही गीतों को ही घाँटो कहते हैं। बुलाकीदास का नाम घाटों से सम्बद्ध है परन्तु इन घाँटों को देखने से पता चलता है कि चैता और घाँटो में कुछ भी अन्तर नहीं है।'' (पृष्ठ–166) चैती में गायक बड़ी मस्ती से झूमि–झूमि के गावेला लोग। घाँटो चैती आ झलकुटिया चैती में अन्तर ई बा कि ई चैती प्रायः पुरूषे वर्ग गावेला। एह गीतन में जइसन जोश आ अलमस्ती रहेला ऊ प्रायः पुरूषे कंठन से बढ़िया लागेला। घाँटो चैती के एगो उदाहरण दे खल जा सकेला–

*''लागइ सुन्न भवनवाँ हो रामा, कान्हा रे बिनु*
*मुनहर घरवा में सुतली सेजरिया*
*हरि जी के देखली सपनमा हो रामा, कान्हा रे बिनु।''*

चैता भा चैती गीतन के सामयिकता के जहाँ तक सवाल बा प्रायः ई देखल जाला कि चैत महीने में चैता गावल जाला बाकिर चूँकि एह गीतन में ऋतुराज वसंत के खूब वर्णन मिलेला एहसे एके कहीं–कहीं वसंत पंचमी के बादो गावल शुरू कर दिआला। दरअसल, 'चैत' महीना के कहीं–कहीं मधु मासो कहल जाला। मधुमास वसंत के प्रतीक मानल गइल बा– एह से चैती गीतन में वसंत–वर्णन खूब भइल बा।

अइसे तऽ भारत के विभिन्न राज्यन सहित जवना–जवना देसन में भोजपुरी के पइसार बा ओजवा चैता–गायन के परम्परा रहल बिया बाकिर बिहार आ उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में चैता गीतन के गायन के सुदीर्घ–परम्परा देखे के मिलत बा। भोजपुरी क्षेत्र चैता के दिसाईं सबसे उर्वर भूमि रहल बा। मगध आ मिथिलो में चैता–गायन के समृद्ध परम्परा रहल बिया। छोटा नागपुर के 'सदानी' बो. लियो में चैता–गायन के लोकप्रियता मिलल बा।

एगो मान्यता इहो रहल बा कि चैते महीना में सत्यवान का प्राणदान मिलल रहे एहसे पटना के नजदीक रानीपुर स्थित 'सावित्री सत्यवान मंदिर' में सतुआन के समय एगो विशाल 'चैता मेला' लागेला, जवना में 'खँजरिया चैता' के गायन होला।

मिथिलांचल में 'चैतावर' गायन चैते शैली के गीतन पर आधारित बा। मगही, अंगिका, बज्जिका आदि बिहारी बोलियनो में 'चैता–गायन खूब मजिगर ढंग से होला।

शुद्ध भोजपुरी का साथे उर्दू के मेल करके मुस्लिम बहुल इलाका सब में चैती गावल जाला, जइसे–

*''काहे अइसन हरजाई हो रामा*
*तोरे जुलुमी नयन तरसाई हो रामा।''*

अवधी आ ब्रजियो में चैती खूब लिखाला आ गावल जाला। आरा, छपरा, सीवान, गोपालगंज, मोतिहारी (पू.चम्पारण), बेतिया (पश्चिम चंपारण), गोरखपुर, बलिया, गाजीपुर, मिर्जापुर, इलाहाबाद आ बनारस आदि जिलन में चैती–गायन खूब धूम–धाम से होला। बनारस के अगल–बगल के क्षेत्र में तऽ वसंतपंचमी से शुरू होके चैत पूर्णिमा तक चैती के धूम मचल रहेला। होली के बाद के पहिलका मंगल 'बूढ़वा मंगल' कहाला एह अवसर पर तीन दिन के 'जलोत्सव' मनावल जाला आ ओकरा बाद

''गुलाबबाड़ी' सजेला जवना में चैती–गायन बड़ी रसगर आ तैयारी के साथे होखेला।

चैती–गीतन के गायन में पहिले उत्सवधर्मिता बनल रहत रहे जवना के रूप आजो विभिन्न क्षेत्रन में देखे के मिलेला। चैता गीत आजो नया–नया संवेदना आ भाव–भूमि से जुड़ल रहिके गीतकार लोग लिख रहल बा। आधुनिक चैता गीतन में पारम्परिक शैली के साथे–साथे प्रयोगो के प्रचलन बढ़ल बा।

–एह विवेचना से ई स्पष्ट बा कि चैता गीतन के एगो शैली के रूप में अपनावत–जोगावत भोजपुरी के एगो अइसन समृद्ध गीत आ संगीत के परम्परा रहल बिया जवना के एगो सुदीर्घ इतिहास बा। लोक कंठ में गुंजायमान रहल ई गीत–शैली दरिया साहेब, बुलाकीदास आदि कवियन के दुलार–प्यार पावत आधुनिको समय में खूब फूल–फल बा। आजो के दौर में एह गीत–शैली के प्रयोग करत अनगिनत कवि आज के युगीन संवेदना आ समाज के विशेषता आ विसंगतियन के उकेर रहल बाड़ें। एह शैली में प्रकृति परकता का साथे–साथे जीवन के सौन्दर्य के विविध रूप देखे के मिलेला। एह शैली में जीवन आ जगत के सुघरता के साथे–साथे ओकरा विसंगतियन आ विद्रुपतो के रच–परोस के भोजपुरी काव्य के सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रखर स्वर के झलकावल गइल बा। चैती गीतन में गार्हस्थिक जीवन के हास – परिहास, मनुहार – ठुकराव, झिझक – झिड़क, रूसल – मनावन, प्रेम–वियोग –सबके स्थान मिलल बा। एह गीतन में भक्ति, वैराग्य, प्रेम, हास्य–व्यंग्य, तप, धार्मिक आस्था, सामाजिक सद्भावना, विसमता आ विसंगति, –सबके समेटे के अकूत क्षमता बा। चैती गीतन में आज संयोग भा वियोगे श्रृंगार के खाली वर्णन देखे के नइखे मिलत बलुक सामाजिक गार्हस्थिक बिम्बन आ प्रतीकन के जरिये आधुनिक चैती शैली के गीत आज ई प्रमाणित कर रहल बाड़ें सन कि जबे तक जीवन–रस से भरल आ विशुद्ध आ खाँटी कविता के बात चली तऽ चैती गीतन के कहीं जोर ना मिली।

❑❑

**आवास संख्या–जी–3**
**ऑफिसर्स फ्लैट,**
**भारतीय स्टेट बैंक के समीप,**
**न्यू पुनाईचक, पटना–800023**

## भोलानाथ गहमरी के दू गो चइता

कवना बने बाजेले बँसुरिया हो रामा
कवना बने

एक अधर घर घर सुनवइया
बृन्दाबन बाजेले बँसुरिया हो रामा
कवना बने

जात रहीं हम बँसिया के धुन सुनि,
के हो मोरा रोकेला डगरिया हो रामा
कवना बने

साँकरि गलिया साँवर रँग छलिया
उहे मोर रोकेला डगरिया हो रामा
कवना बने

**000 000 000 00**

कवने रँग फुलवा फुलइले हो रामा
ओही फुलवरिया

हरी हरी पतिया पातर लागे डरिया
लाल रँग फुलवा फुलइले हो रामा
ओही फलवरिया

ओही फुलवरिया मलिनिया के पहरा
के हो देखि फुलवा लोभइले हो रामा
ओही फुलवरिया

गुन गुन बोलिया साँवर रँग छलिया
ऊहे देखि फुलवा लोभइले हो रामा
ओही फुलवरिया

**000 000 000 00**

(बयार पुरवइया से)

❑❑

उमेश कुमार पाठक ''रवि''

## तरसत अँखिया जुड़इली हो

तरसत अँखिया जुड़इली हो,
राजा राम घरऽ अइले।
रामजोती घर–घर बरइली हो,
सभ लोगऽ अगरइले।।

लाखन बलिदान भए, अजोधा अजदिया,
पाँचऽ सइ बरिसऽ के जुलुमऽ बरबदिया,
तलफत छतिया जुड़इली हो,
कि दिव्यऽ मंदिर बनि गइले।

रामऽ सिया जय–जय चारो दिशा गूँजल,
कहिया के पुन हमरो , एक साथ जूटल,
सरजू अधीर हरसइली हो,
रामऽ मंदिर में अइले।

देश विदेशवा में , बाजेला बधइया,
धरती आकाश तले , गूँजे शहनइया,
भारतऽ माँ कतना धधइली हो,
शुरु धरम मुकुति भइले।

रामलला टाटऽ से, घरवा में अइले,
रामऽ दरबार फेर, जग मग भइले,
रोवत नगरी, सोहइली हो,
रामऽ धुनऽ गुँजी गइले।

❑❑

वनशक्ति नगर, वार्ड न0 – 8
आई टी आई रोड,
चारित्रवन,
बक्सर ( बिहार )

भावेश अंजन

## काहे रूसी गइले

अइले नाही फागुन में सजनवा हो रामा,
काहे रूसी गइले।

अब बेधे लागल पुरुआ पवनवा हो रामा,
काहे रूसी गइले।

रहिया निहारेला नन्हका सुगनवा ,
बतीया से डाहेला तड़पे परनवा,
सुना सूना लागे दुअरा अंगनवा हो रामा,
काहे रूसी गइले।

बइठी मुड़ेरा पर कागा उचारे,
निदिया उचटि जाले भीनुसारे,
लागे भकसावन सगरे भवनवा हो रामा,
काहे रूसी गइले।

कंगना कलइयां में काटे धावे,
जोरी बरजोरी में ना आंटे पावे,
अब कईसे रची अंजन नयनवा हो रामा,
काहे रूसी गइले।

❑❑

गोपालगंज, बिहार

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

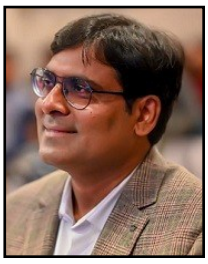

# गाँव में गूँजत नइखे ए हो रामा ...

**मनोज भावुक**

गाँवे आइल बानी। गाँवे माने कौसड़, सिवान, बिहार। बड़का बाबूजी के तबीयत सीरियस बा। सौ पार के होइयो त गइले। उम्र के असर बा। बाकी त चारो तरफ कोरोना के असर बा। कोरोना देश–दुनिया के तबाह कइले बा। लोग तड़प–तड़प के मुअता। उत्सव के एह महिना में चारो तरफ मातम बा। रउरा सभे त जानते बानी, फागुन–चइत पूर्वांचल खातिर उत्सव के महिना ह। फगुआ–चइता गूँजत रहेला। बड़का बाबूजी भैरवी आ रामायण के बेजोड़ गायक। नाम ह– जंग बहादुर सिंह। गायत्री ठाकुर, बिरेन्द्र सिंह (आरा) आ बिरेंदर सिंह धुरान (बलिया) के समकालीन। आसनसोल, झरिया–धनबाद में साठ–सत्तर के दशक में गायिकी के क्षेत्र में एगो बड़ा नाम। भरत शर्मा व्यास आ मुन्ना सिंह व्यास जी जइसन गायक इहाँ के शागिर्दगी में गवले–बजवले बानी। प्रशंसक रहल बानी। बाबूजी आसनसोल सेनरेले साईकिल फैक्ट्री में नोकरी करत रहीं बाकिर फागुन–चइत में कुछ ना कुछ बहाना कके गाँवे आ जाई। दू महिना झलकूटन होखे।

भर फागुन दुआरे–दुआरे फगुआ। फगुआ के दिने दिनभर फगुआ आ 12 बजे रात के बाद उहे गोल, उहे समाज, उहे दरी, उहे तिरपाल, उहे ढोलक, उहे झाल, उहे हुड़का, उहे मजीरा, उहे प खावज, उहे झांझ, उहे तासा, उहे नगाड़ा, रंग–अबीर से पोतल, भांग में डूबल उहे लोग ..... ए हो रामा शुरू। माने फागुन खतम। चइत शुरू .....नया साल के आगाज।

बाकिर, फगुआ–चइता के बीच पर साल से एगो कोरोना आ गइल बा। रंग में भंग के रूप में ई कोरोना संउसे दुनिया आ मनुष्यता खातिर एगो खतरा बा। एकरा से निपटे खातिर एहतियात बरतल बहुते जरूरी बा।
हमहूँ एहतियात बरतत दिन में अपना बंद कोठरी में भा रात में छत प लेटल आसमान में टिमटिमात जोन्हियन के निहारत बानी। हजार–हजार गो सवाल दिमाग के देवाल से टकरा के लौट जाता। बिजुरी–बत्ती आ गइल बा। खपरैल के जगह पक्का पिटा गइल बा। शहरो में जंगल काट–काट के अपार्टमेंट खड़ा हो गइल बा। अब एह पक्का मकान आ अपार्टमेंट के भीतर आदमी छटपटाता, तड़पता, घड़ी–घड़ी ऑक्सीमीटर से ऑक्सीजन लेवल चेक करेता। ई गाँव के बगइचवा भा शहर के जंगलवा काहे कटवा देले ए चनेसर? इहे नू ऑक्सीजन देले सन। जंगले नइखे त कोयल का कूकी ? का होई चइता ?

छत से उतर के बड़का बाबूजी के पास आ गइल बानी। रात के 2 बजता। उहो जागले बाड़े। कुछ सोचते होइहें। आदमी के पास भगवान दिमाग देलें। एह से ई सर्वश्रेष्ठ प्राणी बन गइल। आदमी के पास भगवान दिमाग देलें। एही से ई सर्वश्रेष्ठ परेशान प्राणी भी बन गइल। नींन ना आवे, ओवर थिंकिंग, स्ट्रेस, फ्रस्ट्रेशन, डिप्रेशन ई सब दिमगवे के चलते नू बा। बड़का बाबूजी एक घंटा दुनिया भर के कथा–संस्मरण सुनवलें। कहीं के बात के तार कहीं जुड़ जाता। स्मृति भंग में इहे सब होला। कसहूँ सुता के फेर छत पर आ गइल बानी। बड़का बाबूजी के बतिया दिमाग में चलेता। सुतिये नइखीं पावत। उनका जीवन सफर आ संगीतिक यात्रा पर एक बार लमहर बात कइले रहनी। ओह समय के कई गो नामी–गिरामी गायक के सफर भी ओह इंटरव्यू में समेटाइल बा। बइठ के देखे लागल बानी। ली लिंक रउरो के देतानी। मन होई त देखब –
https://www। youtube। com/watch?v=JdSJcv1nJl0

आकाश साफ हो गइल बा। कउआ बोले लागल बाड़न स। कहाँ त भिनुसहरे कोयल के बोले के चाहीं बाकिर सगरो कउअने के राज बा। बड़का बाबूजी के इंटरव्यू वाला वीडियो खतम होते एगो नया वीडियो खुल गइल बा जवन चौता–चौती पर जानकारी देता।

चइता के बोल के शुरुआत अमूमन 'रामा' आ अंत 'हो रामा' से होला। रउरा अगर चइता सुनीं त रउरा ओहमें प्यार खातिर निहोरा चाहे विरह में होखे वाला वेदना मिली। चइता के मैथिली में चइती कहल जाला। हालांकि चइती आपन शास्त्रीय पहचानो बनइलस अउर हिंदुस्तानी गायन में ई एगो लोकप्रिय विधा बनल। बनारस घराना चइती खातिर मशहूर बा। ठुमरी सम्राज्ञी गिरिजा देवी चइतियो गायन खातिर जानल जाली। चइती संगीत के जानकार चइती के ठुमरी के करीब मानेले, काहेकि एह गाना के शैली में समानता बावे।चइता में रउरा लोकजीवन के तात्क. ालिक रूपो लउकेला जइसे गेहूं के कटनी, टिकोरा से

लदल गाछ, लइकन–लइकियन के बियाह खातिर अकुलइनी आ बेचैनी आदि। चइता सामूहिक गायन के विधा हवे, जवन आपस के मेलजोल के प्रेरको हवे।

चइत में भगवान श्रीराम के जनम भइल रहे, एह से रउरा चइता में उनका जनम के ले के प्रसंगो सुने के मिलेला। हालांकि बधाइयो एगो गायन शैली हवे बाकिर रउरा चइता शैली में अइसन गाना सुन सकत बानी। हई देखीं अब खेसारी लाल यादव के चइता के लिंक खुल गइल–

*घाम लागऽता ए राजा, घाम लागऽता*
*तू तऽ बहरा में करेलऽ अराम*
*चइत में हमरा घाम लागऽता हो रामा*

एही लगले पवनो सिंह के चइता के लिंक आँखी का सोझा आ गइल –

*चइत में जाइब द्वारिका जल भरी ले आइब हो रामा*
*अरे शिव जी पऽ जलऽवा चढाइब हे रामा .. घूमि–घूमि*

फिल्म हमार प्रिय विधा ह। अब हम फिलिम में चइता खोजे लागल बानी–

मनोज तिवारी के फिलिम 'दामाद जी' में एगो चइता बा विनय बिहारी के लिखल आ लाल सिन्हा के संगीतबद्ध कइल। 'गंगा' फिल्म में भी एगो चइता बा अशोक घायल के लिखल आ संगीतबद्ध कइल। मनोज तिवारी के स्वर में एह चइता के बोल बा–

*हे रामा गोरी–गोरी बंहिया ए रामा।*
*में हरी–हरी चुड़िया हे रामा हो चइत मासे*
*अरे! चइत मासे झुलनी गढ़ाइब हो गोरी*
*ए रामा गोरी–गोरी बंहिया ए रामा।*

बड़का बाबूजी के भैरवी नीचे शुरू हो गइल बा। रहि–रहि के साँस ऊपर नीचे होता। एह संसार में सब साँसे के खेला बा। जब तक साँस सुर में बा जिंदगी लय में बा। बड़का बाबूजी के लयदारी में सानी नइखे रहल। जिंदगी के उतार–चढ़ाव में भी उहाँ लय–सुर–ताल में रहल बानी। उहाँ के हाथ हमरा माथ पर बा– " बबुआ तू दिल्ली से आ गइले, अब हम ठीक हो जायेम। बाप खातिर बेटा के साथ संजीवनी बूटी होला"। हमार आँख भर आइल बा। बड़का बाबूजी के आँख लाग गइल बा। हम असहीं मोबाइल स्क्रॉल करत बानी।

शादी के सालगिरह पर अपना पत्नी के मुस्कुरात तस्वीर के साथे केहू पोस्ट डलले बा कि – " तुम्हारी मुस्कुराहट मेरे लिए ऑक्सीजन है और तुम वैक्सीन। सदा खुश रहना और साथ रहना। "
चारो तरफ कोरोना के तांडव चलेता। सोशल मिडिया श्मशान घाट बनल बा। सगरो चीख–चिल्लाहट, रोना–रोहट, दहशत आ घबड़ाहट बा। अइसना में परिवार के साथ–सहयोग सबसे बड़ संबल बा। अब रउरा परिवार के दायरा केतना बड़ बा, ई त रउरा प निर्भर बा। मनुष्य जाति भी त एगो परिवारे ह। जहाँ तकले सँपरे निभावे के चाहीं।

1944 के आसपास बिहार में मलेरिया अउर हैजा महामारी के रूप में फइलल रहे। ओहू समय अइसने लाश के ढेर लागल रहे। आजेकल के तरह मउवत के डर आ भय से लोग काँपत रहे। तब फणीश्वर नाथ रेणु के कहानी पहलवान की ढोलक के हीरो लुट्टन पहलवान ढोलक बजा–बजा के लोग में जिनिगी के प्रति भरोसा जगवलें। गीत–संगीत स्ट्रेस बूस्टर ह। चिंता निवारक औषधि ह। हमरा दिलोदिमाग में चइता के धुन गूँजे लागल। मोबाइल पर भोजपुरी जंक्शन के चइता अंक खुल गइल बा। एह अंक में 35 गो कवियन के चइता–चइती संकलित बा। साथ हीं चइता–चइती के शास्त्रीयता अउर सिनेमा में ओकरा सौन्दर्य पर आलेख बा। दुनिया के सबसे बड़ नायक भगवान राम भी हिम्मत आ हौसला बढ़ावे खातिर एह अंक में बाड़े काहे कि चइते में उनकर जनम भइल रहे। रामजी के जनमे प केतना चइता बा।

एह संकलन के अधिकांश चइता वियोग श्रृंगार बा, पिया के पास ना रहला के पीड़ा आ ताना से भरल–

*रतिया भइल बा नगीनिया हो रामा,*
*पिया घर नाहीं*
*तनिको ना सोहेला गहनवा हो रामा,*
*पिया परदेसी*
*चुड़िया गिनत बीते रतिया हो रामा,*
*पियवा ना अइलें*
*अगिया लगावे कोयलिया, हो रामा,*
*अइलें ना सांवरिया*

कवि भालचंद त्रिपाठी जी के नायिका के त पति के आगमन के सपना आवेता आ अचके नीन खुलला पर देखेतारी कि नाक के नथुनिया त तकिया में फँसल बा। ओही तरे शैल पाण्डेय शैल जी के नायिका पति के ना अइला का खीसी कोयल के सहकल छोड़ावे के बात करत बाड़ी। गया शंकर प्रेमी जी के चइता में हास्य–व्यंग्य के रंग बा। इहाँ कोयलिया ठीक भिनुसहरे जरला पर नून दरत बिया। आकृति विज्ञा 'अर्पण' के रचना में ननद–भौजाई के

नोंक–झोंक के साथे भौजाई के महुआ बीने के ट्रेडिशन आ ननद के व्हाट्सएप चलावे के मॉडर्न अप्रोच देखे के मिलता।

चइता के चुनावी रंग भी बा–

*पहिले त सुध मुंह, पियवा ना बोले*
*महिला कोटा होते आगा पाछा डोले*
*बेरी–बेरी कहें दिलजनिया ए रामा,*
*छुटली चुहनिया*
*पियवा के चाहीं परधानिया ए रामा,*
*छुटली चुहनिया*

सब कुछ के बावजूद वर्तमान से कटल कहाँ संभव बा। मन के कतनो भुलवाईं, कोरोना आँख का सोझा आके खड़ा होइये जाता। कई गो चइता में कोरोना समाइल बा आ जीव डेराइल बा त ओह में प्रार्थना बा, सलाह बा, चेतावनी बा आ चिंता बा।

एही चिंता के बीचे बलिया के कवि शशि प्रेमदेव जी के चइता बा–

*हम काटब गेहूं, गोरी कटिहे तूं मुसुकी !*
*कटनी के काम आगा हाली–हाली घुसुकी !*

भाई हो, काम के साथे–साथ जीवन में एही मुस्की के जरुरत बा। इहे ऑक्सीजन ह।

जे ना चेती ओकरा खातिर डॉ. अशोक द्विवेदी जी त जिनिगी के सच्चाई कहते बानी–

*गते–गते दिनवा ओराइल हो रामा, रस ना बुझाइल*

साँचो कोरोना काल में केतना लोग के दिन ओरा गइल। खैर, हर रात के सुबह होला।

देही पर घाम आ गइल बा, उठे बाबा, चाह पी ल! अपना पोता के आवाज से बड़का बाबूजी उठ गइलें। हमरो तंद्रा टूटल।

अब दुनों आदमी चाह पीयत बानी जा। चाह गरम बा!

❑❑

❍ संपादक, भोजपुरी जंक्सन
ग्रेटर नोएडा
(उ०प्र०)

**कनक किशोर**

## गरीब किसनवा

काटे ना कटे मोर दिनवा ए रामा
गरीब किसनवा
माथे मोर करज के बोझवा ए रामा
गरीब किसनवा

दिन आई बढ़िया सुनत रहनीं भइया
टूट गइल सपना ई दिने दुपहरिया
जरत बाटे पेटवा अंतरिया ए रामा
गरीब किसनवा

पोसत रही पेट मजदूरी करि भइया
पिपर त के खेतवे सहारा रहे भइया
लिलि गइल ओहि के विकसवा ए रामा
गरीब किसनवा

रोटी खातिर गइनीं सूरत पटियाला
दिन राति खटीं नाही पवनी दुसाला
गंउवा के आवेला इयदवा ए रामा
गरीब किसनवा

बाबूजी आ माई बाड़े घरनी हवाले
चइत के कटनी हार्वेस्टर हवाले
चइत के लूट गइल असरवा ए रामा
गरीब किसनवा

❑❑

❍ राँची, झारखंड
चलभाष – 9102246536

# दू गो चइता

दिनेश पाण्डेय

## रात भारी

सँझहीं से तरई उदासलि
सखी री!
राति कुछ बोझिल।

निगुरी नीमि गंध–मद मातल,
झरी–झरी फुलरी भूँइ भरि पाटल,
शोख हवा उदबासल
सखी री!
रात कुछ बोझिल।

दूर कहीं फिर चिरई बोललि,
कवनो किवाँड़ी, खिड़िकियो न खूललि,
हिय के हुलस हतासल
सखी री!
राति कुछ बोझिल।

बिछुरल चौन, रैन ढलि आइल,
पुरुबी कगरी तनी–सा फरिछाइल,
बैरिन नींद बतासल
सखी री!
राति कुछ बोझिल ।

❑❑

## फरेब

तनक न भावे तोरी बतिया
हो रामा,
काहे भरमावे?

बहुते दिन पर टेसू फूले,
पपिहा टेरि बुलावे हो रामा,
काहे भरमावे?

तरबन्नी में आमदरफ बा,
बल्लरि रस बरिसावे हो रामा,
काहे भरमावे?

बिसरल कहवाँ बोल फरेबी,
ठगिन नैन मटकावे हो रामा,
काहे भरमावे?

❑❑

❍ संचार नगर, खगौल, पटना

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

# चइता गीतन पर एगो दीठी

चइता, चैता भा चैती पुरवी उत्तर प्रदेश, बिहार आ झारखंड में चइत महीना में गावल जाये वाली एगो लोकगीत भा लोक शैली हवे। चइत महीना के हिन्दू पंचांग (कैलेंडर) से हिंदू लोग पहिल महीना मानल गइल ह अउर फागुन के अंतिम महीना। भगवान राम के जनम चइत महीना में भइल रहे। कहल त इहाँ ले जाला कि चइता गावे के चलन त्रेता जुग से चालू हो गइल रहल, काहें से कि चैती भा चैता में 'हो रामा' के टेक का संगे गावे के चलन बाटे। एह में राम जन्म, राम सीता के होरी अउर उनका बियाह के कई गो चइता भा चैती गावल जाला । चैती शैली के गीतन के आम तौर पर तीन प्रकार बतावल गइल बा– 1- सधारन चैती 2- झलकुटिया चैती 3- घाँटो चैती। सधारन चैती में एके गो गायक ढोलक, तबला, हारमोनियम आदि वाद्यन के संगे चैती गावेला। सधारन चैती के खड़ी चैती, निर्गुण चैती आ झूमर चैती तीन गो उपभेद बतावल गइल बा। झलकुटिया चैती में सामूहिक चैती–गायन होला। पहिला दल एक पंक्ति तऽ दोसर दल ओ. करा टेक पद के जोर से दोहरावेला। 'झलकुटिया' चैती सामूहिक रूप से झाल कूटके भा बजाके गावल जाला। 'घाँटो चैती' के चैतिये के एगो रूप मानल जाला , ढेर विद्वान लोग एकरा के स्वतंत्र गीत–गायन–शैली माने के पक्ष में नइखीं, बाकिर कुछ लोग एकरा के एगो अलग शैली मानेला।

चैत महीना के मधुमास कहल जाला । त मधुमास में होखे वाला सगरे श्रिंगार, वियोग, विरह, मधुरता आ कोमलता एह चइता गीतन के परान ह। लोकगीतन के अउर कवनो विधा में अतना विविधता कमें भेंटाले। सिंगारिक चइता के कुछ उदाहरण देखे जोग सोझा बा –

*'बैंगन तोड़े गइनीं ओही बैंगनबरिया*
*गड़ि गइल छतिया में काँट हो रामा।''*

भा इहों देखल जाव –

*''चइता मास जोबना फुलाइल हो रामा*
*सइयाँ नहिं अइलें।''*

चैत महीना में मद मातल एगो नायिका के मनोभाव देखे जोग बा–

''कुसुमी लोढ़न हम जाएब हो रामा
राजा के बगिया
मोर चुनरिया सैंया तोर पगड़िया
एकहिं रंग रंगाएब हो रामा।''

भा दिनेश पाण्डेय जी नजरिया कम जोरदार नइखे। देखीं नु–

*तनक न भावे तोरी बतिया*
*हो रामा,*
*काहे भरमावे?*

*बहुते दिन पर टेसू फूले,*
*पपिहा टेरि बुलावे हो रामा,*
*काहे भरमावे?* **(दिनेश पाण्डेय)**

जतने मजबूती से श्रिंगार के बात चइता में लिखल गावल गइल बा, ओतने मजबूती से बिरहो के बाति इहाँ भइल बा। देखीं न केशव मो. हन पाण्डेय जी का कह रहल बाड़ें –

*'पीपर पात झरि गइलें हो रामा,*
*पिया नाही अइलें।'*

**डॉ अशोक द्विवेदी** के एह दिसाई नजरिया चेतावनी भरल लउकत बा । देखीं न –

*गते–गते दिनवा ओराइल हो रामा,*
*रस ना बुझाइल।*

एह देस के लोगन के परान राम आ कृष्ण में बसेला । इहवाँ त राम आ कृष्ण से इतर कुछ सोचलों असंभव लेखा बुझाला। अइसना में उनुके जनम के बात आ उनुका गइला के बात त उछाह आ उत्सव के बाति लेखा बा। फेर लिखले भा गवले बेगर ई अछूता कइसे रह सकेला। देखीं न –

*जागि गइले कोसिला के भाग हो रामा*
*अवध नगरिया।।*
*कोसिला माई लेली बलइया*
*धन –धन हवें राजा दशरथ हो रामा*
*अवध नगरिया ।।*
*घर–घर बाजत लला के बधइया*
*शोभा बरनत नाही जाला हो रामा*
*चइत राम नौमिया।।*

एही राम नवमी का लेके खेती किसानियों के बात चइता में कम ना देखाले । **केशव मोहन पाण्डेय** जी के ई चइता देखीं–

*''फुदुक चहके ले गौरैया, हो रामा,*
*मोरा अँगनइया।*
*अगराइल मन ले बलैया, हो रामा,*
*मोरा अँगनइया।*
*कंत किसनवा के चिंता करे मेहरी,*
*पिया बिना गेहुँवा से के भरी डेहरी,*
*धनि–धरती ले ली अँगड़इयाँ, हो रामा,*
*मोरा अँगनइया।''*

कृष्ण के गोकुल से मथुरा चल गइला पर उहाँ के गोपियन के पीर स्वर देत डॉ जौहर शाफियाबादी के एगो चइता देखे जोग बा–

*"जस मधुबनवा में कुहुके कोइलिया*
*कान्हा बिनु कुहकेली हमरो सहेलिया*
*सूना– सूना लागेला नगरिया हो रामा*
*कान्हा निरमोहिया!*
*जबसे गइलें श्याम बनली जोगिनिया*
*दिन नाही कल, राती आवे ना निनिया*
*बेरी बेरी साले उनकर पतिया हो रामा*
*कान्हा निरमोहिया!"* **(डॉ जौहर शाफियाबादी)**

चइता में उत्सव के हुलास खूब निखर के आइल बा। सिया राम के सोवागत में लिखाइल एगो चइता देखे जोग बा।

*''राजत राम सिय साथे हो रामा*
*अवध नगरिया।*
*माता कौशल्या तिलक लगावे*
*सुमित्रा के हाथ सोहे पनमा हो रामा*
*अवध नगरिया ।।*
*दासी सखी चलो दरसन कर आवें*
*पाऊं आनंद अपार हो रामा*
*बाबा दशरथ दुअरिया।। ''*

चैती गीतन में प्रेम , बिरह , उत्सव , हुलास का संगे आलसो के बात कइल गइल बा। एगो चैती देखीं–

*"चढ़ल चईत अलसाने हो रामा*
*जिया गोरी के।*
*सेजिया बइठल गोरी सोहे पिया संग*
*गम गम गमके चमेलिया हो रामा*
*सोहे गोरी के।।''*

आजु चइता के फलक ढेर लमहर हो चुकल बा। राम, कृष्ण, प्रेम, बिरह, उत्सव, हुलास, खेती, किसानी से आगु बढ़त चइता आम मनई के पीर से लेके राजनीति के तीर तक चला रहल बा।त कहीं

मतदान करे खातिर लोगन के जगा रहल बा। एह घरी त ढेर अलग अलग प्रयोगो हो रहल बा। अइसने प्रयोग नीचे देखल जा सकेला–

*"कुरसी के महूरत न भेंटइलें हो रामा,*
*करिखा पोतइलें।*
*तब नाही बुझनी माई मोर बतिया*
*कुरसी पठवनी दोसरा के सेतिहा*
*बनलो भाग आगी जरी गइलें हो रामा,*
*करिखा पोतइलें।"* (**जयशंकर प्रसाद द्विवेदी** )

भा ई देखल जाव–

*भइलें चुनाव के एलनवाँ हो रामा,*
*करै चलीं मतदनवाँ।*
*करै चलीं मतदनवाँ हो, करै चलीं मतदनवाँ*
*भइलें चुनाव के एलनवा हो रामा,*
*करै चलीं मतदनवाँ।।*
*इहै चुनउवा हउवे सरकार गढ़य के*
*एही से हउवे देस आगे बढ़य के*
*छोड़ीं काम अउरी जलपनवाँ हो रामा,*
*करै चलीं मतदनवाँ।।* (***जयशंकर प्रसाद द्विवेदी*** )

दुनियाँ में पसरल कोरोना महामारी के बातो चइता में खूब भइल रहल। अइसने एगो चइता देखीं–

*"चइता के साध मरि गइलें हो रामा*
*चहके कोरोनवाँ।*
*चाइना अइसन हवा चलवलस*
*सबके मुँह पर ढकनी लगवलस*
*गाँव–सहर कुल्हि डेरइलें हो रामा।*
*चहके कोरोनवाँ।"* (**जयशंकर प्रसाद द्विवेदी** )

गाँवन से होत पलायन का चलते पहिले वाली लहोक अब कमे देखे सुने के मिल रहल बा। गांवनों नवकी पीढ़ी एह कुल्हि से दूरी बना चुकल बा भा गवें गवें दूरी बना रहल बा। बाकिर कतों–कतों आ कबों–कबों सहरो में जब चइता धुन सुने के मिल जाला त मन हुलस उठेला। मन के एह मुसुकी आ हुलास के जोगा बचा के राखे के काम बा।

(**साभार** – डॉ सुनील कुमार पाठक जी के आलेख 'चैता गीतन के रुचि आ रचाव')

❑❑

**संपादक**
**भोजपुरी साहित्य सरिता**
**कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद**

**रामसागर सिंह**

## कउआ गाना गावत

ढोलक झाल करताल कहाँ बा
अब के फगुआ गावत बा,
अब डी जे के ताल पर लोगवा
आपन डाँड़ हिलावत बा!

पूजा पाठ दिखावा भइल
सभका मन ना भावत बा,
आरती गावे लाउडस्पीकर
मशीने ढोल बजावत बा!

ब्यासी छोड़ सब सिंगर भइले
कीर्तन केकरा आवत बा,
फुहर गीत गवनई गा के
लवंडा लोग नचावत बा!

घर में नाही रामायण गीता
नारा लोग लगावत बा,
शर्म के बात बुझौवल जइसे
देखीं लोग बुझावत बा!

निमन बात अब बाउर लागे
बाउर सभका भावत बा,
मीठ बोल जे टेट बेसाहे
उ झागरा फरियावत बा!

निमन बा जे बान्हल बोझा
छिट के आग लगावत बा,
उहे अब बेफाँट कहाला
जे बोझा सरियावत बा!

रामसागर इ अजब समइया
कुछो समझ ना आवत बा,
बिलरा करे ला दुध रखवारी
कउआ गाना गावत बा!

❑❑

**सिवान, बिहार**
8156077577

# पुरना कहानीःनवहीं मनमानी

कौशल मुहब्बतपुरी

**पुरनका कहानी**

पुरान कथा त इहे बा कि कछुआ आ खरहा दूनू दोस्त लोग रहे।खरहा के अपना तेज दउड़ लगावे के ताकत पर बहुत घमंड रहे। बहुत तंग हो के कछुआ एक दिन खरहा से दउड़ के चुनौती मान गइल। दउड़ शुरू भइल। खरहा बड़ी तेजी से बहुत आगे निकल गइल।पीछे मुड़ के देखल त कछुआ बहुत पीछे लउकल।खरहा सोचल कि कछुआ आवस तब ले कुछ आराम कर लिहल जाव।खरहा आराम करे लागल त ओकरा नींन आ गइल। तब ले कछुआ चुपचाप आगे निकल के दउड़ जीत गइल। नींन टूटला पर खरहा तेजी से भाग के पहुँचल बाकिर आपन हार देख के लजा गइल।एह कथा से एगो कहाउतो बन गइल कि धीमा बाकिर लगातार काम करे वाला जीत जालन आऊर तेजी पर घमंड करे वाला हार जालन।

+ × × × ×

**नवका मनमानी**

जीतल कछुआ आ हारल खरहा का एक दिन भेंट हो गइल। खरहा त पहिलही से लजाइल रहे।ऊ कह बइठल कि ए दोस्त कछुआ जी, तू हमरा के हरा त दिहलऽ बाकिर तहरा जीत गइला से कइगो समस्या खड़ा हो गइल बा।पहिल त ई कि दोस्त के काम केहु के धोखा दिहल ना हऽ।तहरा हमरा के जगावे चाहत रहे। हम त तहार दोस्ती देखिये के नूँ सूतल रहनीं। बाकिर तू तऽ चालाकी दिखइलऽ आ हमरा के नीचा दिखावे खातिर चुपे–चुपे भाग गइलऽ।बतावऽ कि ई धोखा ना ह त का हऽ?

ई बतिया सुन के कछुआ कह उठल कि हमरा ई बुझात रहल हऽ कि हमार जीत तहरा ना पची। एही से हमरा के घेर के तू रूआब झारऽ तारऽ।हमरा के बेईमान आ दगाबाज कहऽ तारऽ। देखऽ ई तहार दोस्ती हमरा से कइसे?हम जल के जीव। हवाखोरी खातिर आइल करीले धरती पर।तहरा भेंट भइल तब त तू तेज दउड़ के दिखइलऽ कि ना? एही से हमार जीत के जश्न में सब जल के जीव लोग मना करत रहे कि अब धरती पर ना जइहऽ ना त धरती के जीव लोग तरहा के मरवा देवे के कोशिश करी। तू अब हमरा के जाए दऽ।हो सकत बा कि तूही धोखा रचत होखऽ आ हमार जान ले के बदला लऽ?

खरहा सुन के सन्न रह गइल। ओकरा त ई अचरज होत रहे कि सफल होते केहु कइसे बदल जाला। ओकरा लागल कि हमार हार के बाद ध ारती के सबे जीव लोग शोक मनावे जुटल रहे तब आदमी लोग काहे कहत रहे कि ई त दूगो अलग–अलग तरह के बसेरा के बीच के जीव लोग के बीच के आन्तरिक लड़ाई के स्पर्धा बा।तू खरगोश हो के धरती पर बसे वाला जीव लोग के जल में जिए वाला लोग से हार के नीमन काम ना कइलऽ।तहरा के एक माह के समय दिहल जात बा कि तू कछुआ के हरा दऽ ना त हमनी आदमी लोग कछुआ मार के खइबे करब, तहरो के मार के खा जाइब। हम ना जितेम त नया जनसंहार के रचना रचा जाई। खरहा जोर से कछुआ के कहलक कि सुनऽ, दोस्ती जब दुश्मनी में बदलेला त दुनु ओरिया बहुते क्षति होले। तू हमार बात मानऽ आ चुपचाप कल्याण खातिर हार जा ना त दोस्ती त खतरा में आइये गइल बा, अब जानो खतरे में बूझऽ।

कछुआ सोचल कि एह जीत के बदौलत ऊ जल के बड़हन जीव के बीच पुजात बा।ई नाटको कर के हारल जाई त सब जल के जीव स जुट के हमार का हाल करी से दइबे जानस। ऊ खरहा से कहल कि देखऽ भाई, दोस्ती–हितैषी आपन जगही बा। आपन जाति–प्रजाति के मान–सम्मान आपन जगही बा।कल्याण एही में बा कि तहरा शांति से आपन उमिर गुजारे के बा त गुजारऽ ना त से ना होखे कि महायुद्ध हो जाए तहार समूचे प्रजाति पर खतरा आ जाए।ई कह के ऊ गवें–गवें आपन घर ओरिया डेग बढ़ावे लागल।

खरहा सोचे लागल कि अब कछुआ का भीतरे–भीतर अहंकार हो गइल बा।हमरो त अहंकारे नूँ भइल रहे कि हम रहता में सूत गइला के कारण हार गइनीं। कइसे मटक–मटक के चलल जात बा आ हमार मन भर बेइज्जती कर रहल बा।हमरा बात के ऊ इज्जत ना कइल हऽ त ओकरा भोगे के पड़ी। देखऽ कुछ त करहीं के पड़ी। ओकरा इयाद आइल कि अकिल के प्रयोग कर के त हमार बिरादरी शेर के

कुआँ में डूबा दिहलस। ई कछुआ कवन खेत के मूरई हऽ।हम बतावत बानीं।इहे सोचत खरहा भारी मन से घरे लवटे लागल।

खरहा का लागल कि जंगल के राजा शेर के बीच ई बात रखे के चाहीं बाकिर ओकरा ई डर समा गइल कि हारला के बाद से सभे जंगली जीव लोग ओकरा से नाराज बाटे। कहीं ई ना होखे कि शेर गुस्सा में हमला ना कर देवे।ओकरा साँप–छुछुन्नर जइसन परिस्थिति समुझ में आइल। केहु ई ना कहे कि चौबे गइलन छब्बे बने, दुबे बन के अइलन।ओकरा एगो राहता सूझल कि मनई जे धरती के असली राजा हऽ, ऊ कहीं समझ लेवे त कवनो बात बन जाई। ओकरा मनई पर भरोसा त कम रहे बाकिर मरता का न करता। बदला लेवे खातिर मनई लोग केतना नीचे गिर जाला ओकरा खूब मालूम रहे। खरहा के जाति के केतना औ. कात। शिकार होखे का डर से दिन भर छिपला से फुर्सत ना होखे।

ऊ घूमत–घूमत गाँव में घुसल त दे खलक कि बीसन आदमी एके जगहीं बइठ के कवनो बात पर गहीर चर्चा करत रहे लोग। ऊ अचानक बीचे गोल में घुस के कर जोड़ लिहलक। ई देख के कि शिकार अपने–आप हाथ में आ गइल बा, कइगो आदमी ओकरा ओरिया लपकल। ऊ जोर से बचाईं महाराज कहके चिल्लाये लागल। मनई के गोल में से एगो बुजुर्ग मनई सब के रोक के कहल कि शरण में आवल के मारे के ना चाहीं।पहिले पूछऽ कि एकरा कवन दुख पड़ल बा कि ई खुदे इहाँ आ के कर जोड़त बा।तब ऊ दुखी मन से सब बात बतवलस आ कहलक कि जल के सगरे जीव लोग खुशी मनाऽवत बा कि कछुआ के राजा बना के अब धरती पर आके आपन राज कायम करी। हमरा मनवला के आउर आपन दोस्ती के धरम इयादो करइला के ओकरा अहंकार के आगे कछुओ सुनवाई नइखे। कछुआ एतना दगाबाज होखी, हम ना जानत रहनी हऽ। खरहा के बेयान सुन के आदमी लोग अचरज में पड़ गइल। ओह में एगो लमहर मूँछ वाला ताकतवर आदमी कहे लागल कि हती भर के जीव के एतना गुमान। ऊ कहल कि ए खरहा, आजुये बलुक अभिये जा के नदी किनारे चिल्ला के कह दऽ कि सात दिन के भीतरे कछुआ फेर से दउड़ में भाग ले के हार मान लेस ना त सगरे नदी के जीव लोग के महाजाल में फँसा के मार दिहल जाई।खरहा का लागल कि ओकर निश. ाना सहिये लागल बा।ऊ झट से कहल कि मालिक जइसन राउर आज्ञा आ नदी ओरिया तेजी से चल. ल।ओकरा लागल जइसे गोर में फेरू से ताकत आ गइल होखे।

एने बुजुर्ग आदमी कहे लगलन कि ए मुच्छड़,तू ई कवन नया धंधा शुरू कर दिहलऽ। जल के जीव से खरहा का लंद–फंद बा।एह में हमनी के का लेवे–देवे के बा? मुच्छड़ मुसकात कहल कि काका, कछुआ खइला बहुते दिन हो गइल बा।एही बहाने भोज होई,खरहवो के आ कछुओ के। एह जीव लोग के मनई से ठीक से भेंट नइखे भइल। राज हमनी के,अकिल हमनी का,लड़ाई लड़ी जल आ जंगल के जीव।ई सुनते सब लोग ठहक्का मार के हँसे लाग. ल। बुजुर्ग कह उठलन कि हम त मुच्छड़ के मोट दिमाग वाला पहलवाने बुझत रहनी हऽ।एकरा त ढेर अकिल बा।ओने मुच्छड़ सोचत रहे कि एह भोज के बाद ऊ सरदारी बुजुर्ग से छीन लिही।

ई खबर जंगल आउर जल में आग जइसन फइल गइल कि एह इतवार के कछुआ आ खरहा में दउड़ नदी के किछार पर होई।कछुआ दउड़ में भाग लेवे खातिर ना अइहें त जंगल के जीव लोग जल पर आक्रमण करी आ जल के जीव लोग के भारी क्षति उठावे के पड़ी।ई खबर सुन के जल के जीव लोग में भारी अचरज के साथे भय व्याप्त हो गइल। जल के में एगो बुजुर्ग मगरमच्छ का ई जल्दिए समझ में आ गइल कि कुछ ना कुछ अनहा. नी हो के रही। ऊ जल में मचल खलबली के बीच में बोल उठल कि जरूर कछुआ महाराज कुछ आपन अहंकार भा चतुराई दिखवले होइहें जेकर ई गहीर परिणाम बा। अब जल में जिनगी खतरा में बा। जा के चुपचाप ई खरहा से अकेले हार आवस आउर सब जल के जीव के जान बचावस। मगरमच्छ ई खबर से जेतना तनाव में रहे ओतने मने–मन खुश रहे कि अतेक दिन से ऊ आदमी के बीच आ–जा के आपन अक्किल से घड़ियाली लोर बहा के मरल आदमी के बहुत लाश से मीठ करेजा खा–खा के जिनगी के आनंद लिहत रहल हऽ।बाकिर जिंदा आदमी के माँस खइला ढेर दिन हो गइल बा।ई जेकरा चार डेग चले में अतेक समय लागेला ऊ बाघ–चीता के दउड़ में ना धराये वाला खरगोश के धोखा से हरा पूजात रहल बाड़न। मगरमच्छ के ईर्षया ओकरा के प्रेरित कइलस कि इहे मौका बा जे एगो लमहर कांड करा के कुछ जीभ सोवाद लिहल जाव। ओकरा ई समुझ में आ गइल कि एही लड़ाई में कुछेक अनझटका में जंगल के जीव के मांस तिरा जाये चाहे जल के निमन जीव के मांस मिल जाए त निमने रही।शोर–शराबा आ हो–हल्ला में केने का होत बा बुझइबो ना करी आ बहुत पुरान बदला सब ले लिहल जाई जइसे आदमी लोग फगुआ के दिन के बदला भंजावे खातिर इस्तेमाल करेलन सबे। इहे समुझ के ऊ एगो भड़काऊ बात कहल कि सबे

दिन जंगल के जीव लोग के जल के जीव के जीत ना सोहाला। सभे मिल के चलऽ आ आपन–आपन ताकत बतावत कछुआ महाराज के जितावऽ। यदि जंगल के जीव लोग षड्यंत्र रची त हमनी हमला कर के आपन शक्ति दिखावल जाई। एक दर्जन शेर के त हम असहीं पछाड़ दिहब।इयाद बा नूँ जब हम हाथी के टाँग पकड़ लिहनीं तब हुनका भगवान बुलावे के पड़ल रहे। चिंता मत करऽ लोगे हमरा में अभियो बहुत कुछ बा आ सबसे जादे हिम्मत बा।ई सुन के सबे जल के जीव लोग हो–हो करके कछुआ के हिम्मत बढ़ावे लागल आ कह उठल कि चलऽ ओह दिन जे होई से देखल जाई। ई सब देख–सुन के मगरमच्छ कनखी से सब के निहारत आपन षड्यंत्र पर बिचार करे लागल।

इतवार के दिनवा भोरहीं से जल आ जंगल के जीव नहा–धो के निमन पोशाक में तैयार हो के नदी किछारे बरगद के पेड़ के पास इकट्ठा होखे लागल लोग। जंगल के सब जीव लोग एगो पांति में कोस भर में फइलल रहे।जोर–जोर से जंगल के जीव के जयकार मनावत रहे।ओने करिया जल के जीव लोग नदी कछार पर आ के धरती पर मुँह सटा के तमाशा देखे खातिर बेचैन हो गइल। जल के नीमन जीव लोग जल में ऊँचाई तक कूद–कूद के जल के जीव लोग के हिम्मत बढ़ावत शोर मचावत रहे।ठीक दुपहर में खरगोश आगु आ के कछुआ के ललकारत कहल कि कहवाँ लुकाइल बाड़ऽ ऐ धोखेबाज। बाहर निकल के आवऽ, चलऽ दउड़ के फरिआ लिहल जाव। ललकार आ दगाबाज शब्द सुन के कछुआ का बर्दाश्त ना भइल आ ऊ हाथ–गोड़ पटकत बाहर निकल के आइल आ कह उठल कि आगु एको शब्द अनाप–शनाप बकलऽ त ठीक ना होई । तहरा में हुबा होखे त चलऽ दउड़ शुरू करऽ। दूनू एक–दूसर के आमने–सामने आ गइल ।दूनू के आँख एक–दूसर से मिलल। दूनू एक–दूसर के ताकत आ मिजाज के आँके लागल। दूनू हाथ मिलावे खातिर आगु बढ़े चाहल। ठीक एही समय मुच्छड़ आदमी बुजुर्ग आदमी के देखल आ कहल कि काका कि ई ओतहर बड़हन रोहू मछरी के ई उछाल हमरा बर्दाश्त नइखे होत।का कहत बाड़ऽ? बुजुर्ग कहल कि हमरो रोहू–नैनी मछरी के सोवाद से मुँह में पानी आ रहल बा।नेक काम में देर कवन बात के।बता द कि आदमी के जात का होले।

एतना सुनते मुच्छड़ हो–हो कर के जल के जीव पर हमला कइलस कि सबे जंगल के जीव लोग जइसे शेर–भालू–चीता–बाघ–गीदर लोग जल पर आक्रमण कर दिहलस।ओने मगरमच्छो एही ताक में रहे आउर आपन निशाना बाघ पर लगा के उछल. ल।दूनू ओर से भारी अफरा–तफरी मच गइल। जेकरा जे पकड़ाइल ऊ ओकरे शिकार कइलस। जान–माल के भारी क्षति होखे लागल। एह बीच कछुआ आ खरगोश एक–दूसर के देखल आ एके–साथे कहल कि ई पूरा दुनिया के जीव सब धोखेबाज बा। ऊ जमाना अब नइखे जे शांति से लोग हमनी के दउड़ देखी आ फैसला करीं। चलऽ भागऽ आपन–आपन जान बचावऽ।दूनू दोस्त एक–दूसर के गले लागल आ भाग खड़ा भइल। भारी क्षति त हर लड़ाई के परिणाम होबे करेला।आ एहू खिस्सा के अंत ''खिस्सा गइल वन में सोचऽ आपन मन में ''से भइल।

❑❑

❍ ग्राम, डाकघर–मुहब्बतपुर
वाया–देवरिया कोठी
जिला–मुजफ्फरपुर (बिहार)
पिन–843120
मो०9934918535

भोजपुरी के मान बढ़ाईं, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनीं
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com

भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

# माईभाषा आ माटी से प्रेम के अलख जगावत 'भोजपुरी भूंई'

**रवि प्रकाश सूरज**

रचनाकार जब आपन माईभासा में मन के भाव सोझा राखेला त ओकर मिठास पढ़े वाला के हिरदा में आनंद भर देवेला. ओहू में जदि रचनाकार के विषय आपन माटी के सौन्दर्य आ गुनगान होखे त फेर उ पाठकन के भीतर माईभासा आ माटी के प्रति चेतना के हिलोर उठा देवेला. ई त कवनो साहित्यकार के कर्तव्य ह कि उ आपन रचना से समाज के हर बेकती में मातृभूमि आ भासा खटित प्रेम के लाख जगावे. पूजनीय अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के रचनन के एगो अजगुत संसार बा. माईभासा भोजपुरी के हर विधा में उहाँ के आपन लेखनी चलवले बानी. बाकिर जब आपन माईभासा में आपन माटी के प्रति सरधा आ मन के भाव जब लेखनी से निकसल त उ अईसन धार बन के बहल कि ओकर हिलोर में भोजपुरिया जन मानस भोजपुरी भूंई के नेह–सनेह में डूबी गईल.

'भोजपुरी भूंई' गीतन के संग्रह सन 1986 ई. में छपल अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के एगो अईसने कृति बा जवना में आपन धरती के नेह से रंगाइल भोजपुरिया माटी के सुगंध से गमकत कूल्ह 28 गो गीत बाड़ीसंन. एकर प्रकाशक 'अतुल बंधू' रहीं आ ई गीत संग्रह जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना से छपल रहे. विद्यार्थी जी आपन ई संग्रह के 'भोजपुरी' पत्रिका के संपादक स्व. रघुवंश नारायण सिंह जी के समर्पित कईले बानी. किताब के शुरुआत में एगो छोट रचना 'हमार भोजपुरी' शीर्षक से बा जेकरा में विद्यार्थी जी भोजपुरी भासा के मिठास के तुलना मिसरी के स्वाद से करत अंतिम के दू पंक्तियन में कहत बानी –

" 'मानस' जल में ना आइत मिठास मजगर जो
मिलली ना रहिति मिसिरी अस हमार भोजपुरी"

किताब के भूमिका विद्यार्थी जी 'का कहीं' मथेला से लिख रहल बानी. एकरा में विद्यार्थी जी आपन हिरदा में भोजपुरी प्रेम के उपटे के प्रमुख कारन पटना के 'सिन्हा लाइब्रेरी' में बईठकी के मनले बानी. सिन्हा लाइब्रेरी में किताबिन के उलटत–पलटत उहाँ के देखनी कि जहंवा भोजपुरी के बारे में कवनो किताब में कुछुवो भेंटाईल रहे, सच्चिदानानद सिन्हा साहेब पकर के रंगीन पिनसिन से रेघरीयइले बानी. सिन्हा साहेब के जन्मभूमि तत्कालीन शाहाबादे जिला ह आ उहाँ के बिहार राज्य के स्थापना वाला आन्दोलन के अगुअई कईले रहीं. एकर अलावे विद्यार्थी जी आपन भोजपुरी प्रेम के आउर कूल्ह कारन गिनवले बानी. आगा उहाँ के बतावत बानी कि 'भोजपुरी परिवार' संस्था से जुडाव उहाँ के पटना में नोकरी के दौरान भईल आ एही संस्था के गोष्ठी, बतकही आदि के संचालन करे से भोजपुरी में रचे के प्रक्रिया गते–गते शुरू भईल. एह गीत संग्रह के रचे के उद्देश्य बतावत विद्यार्थी जी कह रहल बानी कि विश्वबंधुत्व आ अखंड भारत के सपना पूरा करे खातिर आपन घर – परिवार, गाँव – जवार के संगे भावात्मक एकता जरूरी बा. कवनो साहित्यकार के मन ओह घरी त बेचौन होईए नु जाला जब उ आपन भासा–संस्कृति में ठहराव आ बिखराव देखे लागेला। विद्यार्थी जी कहतानी कि 'भोजपुरी क्षेत्र' जवन भारत के करेजा में बा उ सुन्न होखे लागल बा। साँच बात बा कि राष्ट्रीय चेतना केहू में तबे भरल जा सकेला जब ओह मनई के करेजा में आपन माईभासा आ माटी से प्रेम रहे.

गीत संग्रह के पहिलका गीत बा ' भोजपुरी माई से'. ई भोजपुरी माई के चरन–वन्दन करत मंगलाचरन के रूप में बा. गीतकार एह गीत में भोजपुरी माई के महिमा बखान करत उनकर चरन आपन लोर से धोवे के अरज करतारे. सरधा के अद्भुत भाव से भरल ई गीत करेजा के छू देवे वाला बा–

"कोरवा से जोहे गईली आन के दुआर सरन
लोरवा से धोवे अइली माई हो ! तोहार चरन"

देशभक्ति के हजारो भोजपुरी गीत आज ले रचाईल बा. भोजपुरिया समाज के देशभक्ति के कवनो जोड़ नईखे. 'रूप अपना देस के' शीर्षक गीत भारत भूंई के वन्दना करत एगो गीत बा जवना में भोजपुरी के सेसर गीत 'बटोहिया' जईसन भारत के नदी ब्रह्मपुत्र, सिन्धु, जमुना से ले के ई माटी में जनमल महामनई अशोक, महावीर, कबीर आदि के जिकिर बा. असल में संग्रह के शिर्स्क टी 'भोजपुरी भूंई' बा बाकिर दुसरके गीत भारत भूंई के महिमा में देवे के पाछा गीतकार के एगो ईहो भाव बा कि भोजपुरिया लोगन में भारतीयता कूट–कूट के भरल बा. 'भोजपुरी प्रेम' छुदुर स्वारथ वाला क्षेत्रवाद ना हो के अखंड भारतीयता के सपना देखेवाला राष्ट्रवाद ह. ई बात

लिखले बानी. आ ई भाव किताब के दोसरो गीतन में लउकत बा. एगो गीत बा जेकर मथेला ह 'भोजपुरिया'. स्पष्ट बा कि एकरा में एगो आदर्श भोजपुरिया सपूत में का गुन होखे के चाहीं एकर जिकिर बा. तनि एकर पंक्तियन के देखीं द्

"भारत के मानत आईल हाँ भगवन भोजपुरिया
हिंदी के जानत आईल आपन जान भोजपुरिया"

इ बात साफ हो जाता कि भोजपुरी प्रेम के माने राष्ट्रभाषा हिंदी से बैर राखल ना ह. एही गीत के आगा के पंक्ति देखीं–

"भासा के झगरा–झगुरा देखि झवान भोजपुरिया"

विद्यार्थी जी के गीतन में जवन राष्ट्रवाद के कल्पना कईल बा, असल में उहे आदर्श राष्ट्रवाद हकृआपन भासा–संस्कृति, साहित्य आ माटी से प्रेम का संगे–संगे देस चेतना के भाव.

विद्यार्थी जी के नजर में भोजपुरिया समाज के आपन भासा–संस्कृति के दिसाईं भावशून्य रहला के वजह से ही आजु भोजपुरी भूंई सांस्कृतिक रूप से निष्क्रिय हो रहल बा. जरूरत बा भोजपुरिया लोगन में आपन भाषाई–सासंकृतिक धरोहर के दिसा. ईं चेतना के संचार कईल. ईहे भाव के सहेज्ले कुछ सुंदर गीत एह संग्रह में बाड़ीसन. 'उठे भोजपुरिया', 'भोजपुर से', 'जागल सभे, भोजपुर जागे', 'बोलहटा' आदि गीतन में गीतकार भोजपुरिया समाज के ललकार के जगा रहल बाड़े. असल में ई मानव मन के सुभाव ह कि जब उ आपन वर्तमान के प्रति चेतनाशून्य हो जायेला त ओकरा के जगावे खातिर अतीत के सोनहुला समय याद करावे के परेला. गीतकार विद्यार्थी जी एह गीतन के माध्यम से ई उद्देश्य में सफल बानी. उहाँ के भोजपुरी भूंई के आध्यात्मिक पुरुष गौतम बुद्ध, गोरख, हरिचन, राजा भोज, दधिची से ले के वीर पुरुष शेरशाह, कुंवर सिंह, अब्दुल हमीद के याद परावत बानी.

कुछ पंक्तियन में एकर उदाहरन प्रस्तुत बाकृ

'जुगवा आजू करे ललकार, 'जागल सभे, भोजपुर जागे!'
राजा 'भोज', 'नवरतन' जागे,
'रोहतास' के गढ़–बन जागे,
'सहसराँव' के 'शेर' उठे अब,
'कुंवर सिंह' के तन–मन जागे"

गीतकार के भाव बा कि जब–जब भोजपुरी भूंई जागल बिया, तब–तब देसवो में नवजागरण के संचार भईल बा. कुछ गीतन में जोश भरे वाला ललकार के भाव बा त कुछ में गीतकार बहुत सौम्य आ सहज भाव से भोजपुरिया आम जन के आपन माईभासा भोजपुरी के प्नावे खातिर निहोरा कर रहल बानी. 'भोजपुरी अपनाईं जा' शीर्षक गीतन के कुछ पंक्ति देखीं–

'मईया के दूधवा का संगे पबलीं जा बोली
चालो–चिका–कबडी खेले के बन्हली जा टोली
होई के सेयान गवलिहां जा बधरिया में
सोरठी, बिरहवा, कजरिया, चइत, होली"

भोजपुरी भासा अपनावे के निहोरा करत विद्यार्थी जी साफ शब्दन में कह रहल बानी कि भोजपुरिये आपन माईभासा ह. आजकाल एगो नया फैशन बाकृ 'हिंदी हमारी मातृभाषा है' सीखे–पढावे वाला जवना के विद्यार्थी जी ई कहत अस्वीकार करतानी कि जवन बोली माई के दूध के संगे हमनी के मिलल बा, असल में उहे हमनी के माईभासा ह.

भोजपुरी भासा के 8 वीं अनुसूची में शामिल करे के मांग ढेर दिन से उठ रहल बा. एकर विरोध करत कुछ हिंदी के साहित्यकार–अध्यापक लोगन के लागेला कि भोजपुरी के मान्यता मिलला से हिंदी के नुकसान हो जाई. 'बूड़त बानी, बांहीं बढायीं' गीत में विद्यार्थी जी अईसन कुल्ह् हिंदी के आचार्य लोग प चोट करत कहतानी कि –

"हिंदी के 'आचार्य' लोग का लउके लागल खतरा
भोजपुरी के मुंह देखत बिगदत बा जिनिकर जतरा"

भोजपुरी के अईसन दुत्कार हो रहल बा जवन मैथिलि भा आउर कवनो भासा के संगे नईखे हो खत, एकरो से गीतकार के मन व्यथित होके कह रहल बा –

"पंजरे देखीं, मैथिल–कोकिल के बा कतना आदर
भोजपुरी मईया गईया के कुकुर करे निरादर"

'सीखीं' एगो ४ पंक्तियन के छोटहन कविता बा बाकिर एही ४ पंक्तियन में विद्यार्थी जी भोजपुरी साहित्य के वर्तमान दशा प चोट करतानी आ लोगन से निहोरा करतानी कि भोजपुरी साहित्य किन के पढ़ल जावकृ

"तनिका पहाड़ो प चढ़े के सीखीं
झटझारी रहिया प बढे के सीखीं
जनि जान दीं रा पईसा बचा के
भोजपुरी किनी–किनी पढ़े के सीखीं"

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी के ई संग्रह में गीतन के शिल्प बहुत सुंदर बा. अलगा–अलगा छंदन के इस्तेमाल से हर गीत के गेयता में चार चाँद लाग जाता. संग्रह में विद्यार्थी जी एगो भोजपुरी पंवारा 'भोजपुरी बरनन' लिखले बानी जवना में उ आपन माइभूंई के नमन–वन्दन करत भोजपुरी भूंई के भौगोलिक सुन्दरता, अध्यात्मिक धरोहर, साहित्यिक जोगदान, ज्ञान–विद्या, वीर पुरुष सभके इयाद करत बानी. ई पंवारा लमहर बा बाकिर एकर गेयता एकरा के सुघर बना देता.

देस के आजादी खातिर लड़ाई में भोजपुरी भूंई के कई गो सपूत आपन कुरबानी दिहले बाड़े– 1857 ई. के संग्राम के सेनानी कुंवर सिंह कई गो भोजपुरी गीत, गाथा, उपन्यास, काव्य के नायक रहल बाड़े. विद्यार्थी जी एक एह संग्रह में दू गो अईसने गीत बाकू'कहनी कुंवर सिंह के' आ 'कुंवर सिंह का बिजय दिन पर'.

पतित पावनी गंगाजी भोजपुरी भूंई के आपन जल से सींच के उपजाऊ आ समृद्ध करेली. गंगाजी भोजपुरिया समाज के एगो अभिन्न अंग हई . गीतकार 'गंगाजी' शीर्षक से एगो खुबसूरत गीत रचले बानी जेकरा में गंगाजी के पौराणिक इतिहास से ले के भौगोलिक इस्थिति आ सुन्दरता के अजगुत बखान बा. एह गीत के आखिर में गीतकार ई कामना करत बानी कि देह छूटे घरी पुण्यसलिला गंगाजी के जल मुख में परी जाईत त जिनिगी धन्य हो जाईत.

भोजपुरी भूंई के खलिहां पौरानिके इतिहास आ भौगोलिक सुन्दरता नईखे बलुक एह माटी से एक–से–एक अध्यात्मिक आ बौद्धिक चेतना के महापुरुष जनमल बाड़े जेकर दिहल ज्ञान से संउसे संसार में अंजोर फैलल बा.ई देशभक्त कवि के चिन्हासी ह कि उ वर्तमान के अतीत से मिलावत समाज में आपन संस्कृति प गौरवबोध के भाव जगावेला. 'बुद्ध जयंती' शीर्षक गीत में विद्यार्थी जी गौतम बुद्ध के गुनगान करत कहतानी कि 'सारनाथ' भोजपुरी भूंई के उ जगह ह जहंवा से सबसे पहिले बुद्ध अमरित–बोध बंटले रहीं. गीतकार विद्यार्थी जी एगो गीत 'विद्यापति पर्व' रचले बानी जवना में उ मैथिल कवि के वंदन करत ई अरज करतानी कि जईसे उहाँ के 'मैथिलि' के मान बढ़वनी अईसही यभोजपुरी' आ 'मगही' के सम्मान मिल जाये–

"सरधा–सुमन हो स्वीकार!
हे महाकवि! चरन पर रउरा लिलार हमार!
'राष्ट्रभासाह' भवन में'मैथिलि' के परसार,
'भोजपुरियो' 'मगहियो. के करित मुंह उजियार"

अईसन लागता कि गीतकार आपन माईभासा भोजपुरी के आदर–सत्कार भा मान्यता ना मिलला के वजह से व्यथित बानी. गीतन के लिखे क्रम में उहाँ के भोजपुरी के कई गो पुरनिया आ आपन समकालीन साहित्यकार लोगन के चर्चा कई जगह कईले बानी. एकर उद्देश्य ईहो सकेला कि पढ़े वाला वर्तमान भोजपुरिया समाज आपन साहित्यिक विरासत से निमन से परिचित हो जाये आ भोजपुरी साहित्य के केहू कमतर ना आंके. विद्यार्थी जी एगो गीत भोजपुरी के महान रचनाकार 'जनकवि भिखारी ठाकुर' शीर्षक से अलगा से लिखले बानी. भिखारी ठाकुर के भोजपुरी भासा में जोगदान के रेघरियावत उहाँ के लिखतानी–

"जुग–जुग जिये हमार भिखारी!
लीला राम–स्यामसुंदर के, बिरहिन के अलचारी,
भोजपुरी भासा में कईले रूपक आपन जारी"

किताब के अंत में 'सरधांजुरी' शीर्षक से एगो रचना संकलित बा जवना में विद्यार्थी जी भोजपुरी के शीर्ष साहित्यकार मंगलाचरण उपाध्याय, शिवपूजन सहाय, 'मुंहदुब्बर' दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', महेंद्र शास्त्री, परमेश्वर दुबे 'शाहाबादी', पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, केदार पाण्डेय, कुञ्ज बिहारी प्रसाद 'कुंजन', विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', राधिका देवी श्रीवास्तव के इयाद करत सभे के माईभासा भोजपुरी में जोगदान के रेघरियइले बानी. एह संकलन में अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी के दू गो चना 'परिचे हमार' आ 'खास गाँव हमार' बा जवना में उहाँ के आपन परिचय देत आपन गाँव शाहपुर, भोजपुर के रहनिहार बतवले बानी. आपन पुरनिया लोग के देवरिया (उत्तर प्रदेश) से चल के एहिजा बसे के ब्यौरा देत लिखतानी कि 1645 ई. में चौधरी महासिंह (क्षत्रिय), मौजा तिलौली अहिरौली (देवरिया) से हमरा पुरुखा ठाकुर रुद्रनारायण (दीवान") उपपुरोहित तिवारी जी आ आउर हाली–महाली ले के अईले." अपना के उहाँ के भोजपुरी भूंई के सेवक मान रहल बानी जे हरमेसा रातो–दिने भोजपुरी माई के सेवा में लागल रहेला–

"भोजपुरी–महिमा बखानि के पंवरवा में,
धरती के भाग भिनुसहरे जगाईला,
बिरहा, चईत, होरी, पद निरगुनवा
के गाई रामायण जी के बानियाँ कढ़ाईला"

भोजपुरी भासा–साहित्य के सिरजना में अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के जोगदान भुलावे लायक नईखे. निबन्ध, गीत, कहानी–संग्रह, से ले के बरवै–संग्रह आ प्रबंध काव्य तक इहाँ के लेखनी से निकसल. बाकिर हमरा नजर में 'भोजपुरी भूंई' गीत–संग्रह अईसन बा जवना में विद्यार्थी जी के मन के भाव समाईल बा. ई उनकर माईभासा आ माटी से प्रेम ह जेकरा वजह से उहाँ के कई गो रचना भोजपुरी में लिखनी. आ ई गीत–संग्रह में त उ प्रेम के मूल भावने लिखा गईल बा. अईसन लागता कि ढेर कुल्हि रचना लिखला के बादो

विद्यार्थी जी के मन में आपन भोजपुरी भूंई के प्रति जवन अनुराग बा आ भोजपुरिया जनमानस में आपन माईभासा के प्रति जवन चेतनाशुन्यता बा ओ. करा से उहाँ के मन अईसन व्यथित भईल होई कि ई रचना सोझा आईल. ई गीत–संगढ़ के गीत एतना साल के बादो आजुओ एह से प्रासंगिक आ सामयिक बुझाता कि भोजपुरी भाषा–साहित्य प जवन संकट ओह घरी रहे उ आजुओ जस–के–तस बा बलुक आउर जादे बा.

आजुओ भोजपुरिया लोगन में आपन माईभूईं के प्रति चेतना आ नुराग के बहाव बा जेकरा के ददोर करे में ई संग्रह के गीत सहायक हो सकेला. कूल्ह गीतन में गेयता बा आ हमरा समझ से ई गीतन के लयबद्ध कर दियाव त एकरा से भोजपुरिया समाज में नवजागरण फैले में मदद होई.

अंत में ईहे संग्रह के एगो गीत 'अजगुत सपना' के कुछ पंक्तियन के साथ ई कामना कि भोजपुरी भूंई के अनन्य सेवक विद्यार्थी जी के सपना जल्दिये पूरा होखे–

"भोजपुरी–हिंदी हमार माई, एक छोड़ी दूई पाईं हो,
मईया! बनि हम 'सरवन पूत' बहंगीया उठाइब हो!"
"जब ले ई देहिया आबाद रही, मईया इयाद रही हो,
मईया!मीठ तोहरा मुंहवा के बोलिया
ना कबहूँ भुलाइबि हो!"

❑❑

**सदस्य,**
**मैथिली–भोजपुरी–अकादमी, दिल्ली सरकार**
**शोधार्थी, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग,**
**वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा**
**संपर्क सूत्र– 9891087357, 9470258919**
**ई मेल– raviprakashsuraj@gmail-**

**विद्या शंकर विद्यार्थी**

# गवना के लोर

"बइसाख में बेटी के दुआर लंघा दिहीं समधी जी, हाथ सकेती त बराबर लागल के लागले रही।" ई बात सांझ के आइल समधी रात के थरिया पर खाना खात रमेसर से कहलन। रमेसर के लइका के बाजार से लवटत घरी एगो मोटर साइकिल वाला धक्का मार देले रहे। आ इहे धक्का के हालचाल जाने खाती आइल रहन उनुकर समधी। रमेसर बो सुनली कि आइल समधी बेटी के गवना के दिन मांगत बाड़न आ ई नइखन देखत कि लइका अस्पताल में भर्ती बा। त उनका मन में आइल कि भला अइसन आदमी होला सनसार में। करेजा पर दोसर घावे न देत बाड़न ई। के ना चाहेला कि बेटी बिआह गइल त अपना ससुरा जाव आ ससुरइतीन हो जाव।आ अपना घरे दुआरे रहो। बाकि पत्थल त हाथ जे दबाइल बा। ऐने बेटी के गवना के बोझ त ओने बेटा के दवा दारू के भार। माथे चकराइल रहे रमेसर के। हाथ जोर के कहलन –"बइसखवा के बाद कहतीं त ना नीमन होइत। अभी बहुत हलकानी में बानीं,
हम।"

"फेर के साइत नीमन नइखे। आ समइओ त दोसर जुट जाई।" रमेसर के समधी सोमारू एक लेखा जिद पर आ गइलन।

"हरका के दवाई चलत होखे आ ओही बीच में सेठ नियन तगादा, ई नीमन लागता, रावा। बेकत त अब रउरे हिय आ हमार बेटी लागी । बिआहला के बाद बेटी पर बाप के अधिकार लागेला कि हमार कहल लागी।" रमेसर दूर के बात कह देलन।

"जवन बिआह में रउरा देले बानीं तवन हमरा आ रावा सब पता बा। गवना में तुलसी के पतईओ मत देब। बाकि दिन धर दिहीं।" समधी के रूख ना बदलल।

"ठीक बा, बइसाख के पहिलके लगन के दिन तय रहल।" रमेसर ऊदासे मन कहलन।

" हँ, ई भइल कैदा के बात।" समधी के बात रह गइल।

एही बीच थरिया के भात खतम हो गइल रहे।आ समथी के अँचवते रमेसर संगे चल देलन। सुते के व्यवस्था करे।

अगिला दिन सहतु महतो के पता लाग गइल कि रमेसर अपना बेटी के गवना के दिन धर दिहले बाड़न।अंगना में रमेसर आ रमेसर बो चाय पीअत रहन जा कि सहतु कुदारी मांगे के बहाने आ गइलन आ बात फेरत कहलन –"केने बाड़ऽ हो रमेसर भाई, तनी कुदरिया दिहऽ खेतवा ओरे जाके देखले आईं पनिया चढ़ल कि कवनो काट देलसन।"

"तूँ दोसरा के ना काटऽ त तोहार दोसर ना काटीं।" रमेसर उनुकर हकीकत कह देलन।

"से बात अब नइखे रह गइल भाई। धाह आ धाक के जमाना गइल। अच्छा उदास काहे बाड़ऽ जा दूनों बेकत**?**" सहतु पुछलन।

"तूँ त जनते बाड़ऽ कि बेटा अस्पताल में भर्ती बा आ दवाई चलता ओकरा।"

"सब ठीक हो जाई भाई, डाक्टर पर भरोसा रखऽ। गर्दिश आवत जात रहेला इंसान पर।" आउर बात दाब देलन सहतु कि जरूरत के बात ई दूनों बेकत खुदे कहिहें। आ पेटो हंउड़त रहे सहतु के कि हमहीं पुछ लिहीं का। कि समधी आइल रहन गवना के दिनों मांगत रहन?

पेट घोरांठ बड़ा खराब चीज ह। सहतु कुदारी लेके दू डेग आगे बढ़लन आ फिर लौट के पुछ देलन–"तोहार समधी आइल रहन दिन ओन मांगत रहन का गवना के।"

"धर देनी।"

"हित के कहे के काम ह, तोहरा त आपन सांउज देखें के चाहत रहे।"

"हित चढ़ल रहे। अब तूँ मदद करिहऽ कि कारज पार लागे।" रमेसर भरोसा से आग्रह कइलन।

"गाँव में बानीं त धार में ना नू बहे देब।" सहतु आश्वासन देलन।आ कुदारी लेके चल देलन।जवन ख्याल लेके आइल रहन तवन पता लगा लेलन। अब त कुदारी लौटावें के रहे।चेपा देबे के रहे त समय ताक के।

दिन जात देरी ना लागल। रमेसर के बेटा नीमन होके अस्पताल से आ गइल बाकि अबहीं बैसाखी के सहारे चलत फिरत रहे। घर के मैनी भइस हटा देलन रमेसर कि रोज–रोज बेटी के गवना ना नू होई। हित कहले बा कि हमरा तुलसी के पतो ना चाहीं लेकिन आपन फर्ज का कहता। पलंग कसा गइल। बकसा के साथे आलमारी आ गइल कि सभे अपना बेटी के का से का चीझ देता। हम आलमारी देत बानीं त का, कुछ नइखीं देत। सहतु बो बेटा के साथे बइठ बतिया के अपना स्वांग से कहली कि बेटी जन जाने कि ई सब हमनी के भइस के आइल पइसा के बाद महाजन लेके कुछ करत बानीं जा ओकरा के एगो चौन आ कान बाली किन दिआव। ना त ओहीजा के लोग ओकरा के जिनिगी भर ताना दिहीं कि तोरा बाप के तोरा में सरधा रहीत त छूँछे गरदन आ कान रहीत। रमेसर दूनों बाप–बेटा तइयार हो गइलन।

मददगार सहतु महतो के अलावा दोसर केहू रहे ना। एक भर बोलावल गइल त सहतु दू भर कुदारी लौटावे से बेशी आपन मतलब साधे के ख्याल से आ गइलन कि दोसर केहू खेत पर रोपेआ देबे खातीं तइयार जन हो जाए। गाँव नू ह हजार गो बाड़न काम भांड़े ओला। फाटल बेवाए तेल–बाती से ततारे के जोगाड़ बतावे लगइहें। घर के निकसार पर केवाड़ी बंद करके रोपेया के लेन–देन हो गइल। चौन आ कान के बाली आ गइल।

सांझ के बारात आइल आ भोर–पहर में रमेसर के बेटा जवन कि चले ना सकत रहे गाँव के लोग के सहारे आपन फर्ज के अदायगी करत अपना बहिन सबित्री के गला में सिंकरी डलला के बाद सुन दूनों कान में बाली लगावे लागल, कि सबित्री पुछ देलस –"सांच–सांच बोल ई कुल्ही कहाँ आइल ह।" रमेसर के बेटा, कुछ बोले से पहिले ढहना गइल आ सबित्री चल गइल लिहले गवना के लोर।

❑❑

❍ **रामगढ़, झारखण्ड**

# डाला के साइत

जनकदेव जनक

"का बबुआ, बारात के तइयारी भइल कि ना ? "
"हां भइया तइयारी त चल रहल बा. वैसे कलेवा के सामान सहेज के रखवा देले बानी. अब बिहौती सामान कीने के रह गइल बा."
"कवन–कवन सामान खरीदे के बा, जरा हमहूं त जानी बबुआ!" सवेरे सवेरे अपना मुंह में दतुवन के हुड़ा करत शिव रतन भइया हमरा घर के सहन में पड़ल चउकी पर आके बइठ गइले आउर हमरा उत्तर के इंतजार करे लागलें.
" भइया , दूल्हा के पोशाक त पहिले से ही तइयार बाटे. जमाना के अनुसार कोट, फुल पैंट, गंजी, जाघियां, तौली, टाई, जूता, मोजा आदि बनवा दिहले बानी. काल्ह बाजार से सिंहोरा, दउरा, ताग पात, सिरमउर, माला, पगड़ी, इतर, गुलाब जल, सेंट आदि भी कीन लाइल बानी."

" सब तो बिढ़या कीनले बाड़ हो बबुआ, बाकिर डाला बनावे के साइत चंद्रिकवा डोम के देले बाड़ कि ना ."
" अरे भइया, आज काल्ह जब सब कुछ बाजार में उपलब्ध बात फेरू डाला के साइत देला के का जरूरत बा. रउरा जादे माथा पच्ची करे के जरूरत नइखें. आज सांझ के बाजार से ऊहो कीन के लाइब. रउरा एकदम बेफिकीर रहीं, हम अपना मकान के सहन में रहेठा के खरहेरा से झाड़ू लगावत शिव रतन भइया से बोल पडनीं

"हम मानत बान शहर में रह के तु बहुत समझदार हो गइल बाड़. बाकिर शादी बिआह के मउका पर गांव के रसम रिवाज अलगे मायने रखेला. बहुते चीज हमनी के पउनी ' लोग से मंगावे के पड़ेला. एकरा बदला में उ लोग नेग चार ,सीधा आदि मांग के ले जाला. ई तो बताव कि बबुआ के शादी कवना तिथि के बाटे?" भइया हमरा के समुझावत पूछलें.
" तिथि त हमरो मालूम नइखे. बाकिर बारात छह जून के निकली. "
" अरे बाप रे, आज त तीन तारीख हो गइल. अभी तकले तु डाला के साइत ना भेजवइल. अब सब काम छोड़ के तु चंद्रिकवा के इहां चल जा, शहर में भले डाला मनिहारी के दोकान में मिल जात होई, बाकिरा इहां ओकरे इहां डाला मिली. वह थोड़ा मुंहजोर हटे. भइया थोड़ा सा चिंतित होत हमरा से बोललें.
"चंद्रिका जी कहवां रहेलन? हमरात कुछो पता नइखे. फेरू हम उनुकरा के कहवा ढूंढ़त फिरब. " हम भइया से पूछनी.
" धत्त तेरी के, तू चंद्रिकवा डोम के नइख जानत? खैर कवनों बात नइखे. तू सीधा बनपुरा बाजार चल जा,
नहर के किनारे डोम टोला बसल बा, ओही जा ऊ मिल जाई."
" भइया अगर डाला छोड़ देवल जाई तो काम ना चली का ? "
" आरे तू कइसन बुरबक नियर बात करत बाड़. कतही डाला के बिना बिआह होला. डाला त लक्ष्की के माड़वा के शोभा हटे. ओकरा बिना भारी जग हंसाई होई. "

भइया हमरा पर बिगड़त बोल पड़लें आ कहले," जब दूल्हा के बारात निकले ला त कलेवा के गाड़ी के पीछे डाला बांधल जाला. आज कल बैल गाड़ी भा टायर गाड़ी के चलन कम हो गइल बा त लोग चार सौ सात ,जीप, ट्रैटर आदि के पीछा बांधत बाटे. "
" ठीक बोलत बाड़ भइया, डाला वाला गाड़ी के देखते अनजान लोग भी समझ जाला कि ई गाड़ी बारात लेके जात बिया. पहिले राम वेड सीता, राधा परिणय किशन लिखे के परिपाटी ना रहे. लोग लिखबों करे त एकरंगा लाल कपड़ा पर मैदा के लेई बना के रूई के फाहा से सुस्वागतम, शुभ बिआह आदि लिखे."
" ठीक समुझले बबुआ, अब बिना देर कइले चट पट भाग जा चंद्रिकवा के घरे. "

रउरा के बतावत चलीं कि हमरा बड़का लक्ष्का के शादी रहे.एकरे तइयारी में पूरा परिवार लागल रहे. अइसे त पूरा परिवार शहर में रहेला. बाकिर परिवार में कवनों तरह के जग परियोजन पड़ला पर गांव जाये के पडेला काहे कि गांवें में भाई भवधी के लोग रहेगा. बदलत परिवेश गांव आ शहर के बदल देले बा. अब त जे जहवां बाटे, ओही जा शादी–बिआह,जन्म मरण पर जग कर लेता.

खैर, हम आपन साइकिल निकलनी आ

साइकिल के पैडल मारत बनपुरा बाजार के तरफ निकल पड़नी.

सारन से सिरिस्तापुर, सिरिस्तापर से ताज पुर होत हम बुनपुरा मोड़ पर चहुंप गइनी. मोड़ पर एगो चाय के दोकान रहे. ओकरे सामने साइकिल के ब्रेक लगावत खड़े खड़े पूछ बइठनी,'' भइया, डोम बस्ती केने बाटे?''

बनपुरा बाजार के देखते हमारा भीतर के बचपन जाग उठल. जब सब्जी बेचे खातिर हम अपना बड़का बाबुजी के साथे बाजार जाई. 40 50 बरीस बाद हम इहां आइल रही. सब कुछ बदल गइल रहे. गलियन के कच्च सड़क अब प?का रोड हो गइल रहे. सड़क के किनारे बिजली के पोल खड़ा रहे. बिजली के तार भी तानल रहे. बाकि बिजली के भरोसा ना रहे कि कब रही ना रही. बनपुरा बाजार से एकमा ,साहजित पुर जाये खातिर जीप, कार,टेंपो आदि लागल रहीस. पहिले ई सब सपना रहे. अब त सवेरे छपरा, सिवान आ पटना खातिर बस भी मिल जात बाड़ीस. पहिले बस पकड़े खातिर एकमा चाहे सहाजित पुर जाये के पड़त रहे. हम मन ही मन बनपुरा के इतिहास भूगाल में फ सल रही तले चाय वाला बोलल.

'' भइया, बनपुरा बाजार जाये खातिर दु गो राहता बाटे. '' चाय वाला अपना ग्राहक के निबटवला के बाद हमरा से कहलस, हमार तंद्रा भंग हो गइल. हम ओकरा से फेरू पूछनी,'' कवन राहता ठीक रही भइया?''

ऊ बोलल कि बाजार के गली वाला राहता ठीक नइखे. पीसीसी जहां तहां टूटल बाटे. साइकिल से उतरे चढ़े के पड़ी. एही से बंगला के तरफ से जाये वाला दुसर राहता ठीक बाटे. आगे नहर के पुल बाटे. उहां चहुंप के नहर के पगडंडी पकड़ लेवे के पड़ी. ओकरा समुझावला के अनुसार हम बंगला वाला राहता पकड़ लेहनी. पुल पर कुछ लोग खड़ा रहे. ओह लोग से डोम टोला जाये के राहता पूछनी. जानकारी मिलल कि नहर के उत्तर वाला टोला डोम समुदाय के हटे. अब नगर के पगडंडी पकड़ के आगे बढ़नी. जबरदस्त घाम रहे. आषाढ़ के महिना शुरू हो गइल रहे. ओकरा बादो सूरज महाराज के ताप में तनकों कमी ना रहे. पसीना से लथ पथ हम आपन साइकिल बढ़ावत आगे बढ़त रहीं. नहर में पानी के टोटा रहे. नहर के पेटी में जहवां तहवां गढ़न में पानी रहे, कुछ लक्का पानी उबिछत रहस त कुछ लक्का पानी के हिंड़ोंड़ के गंदा करत रहस,ताकि मछरी उपर उग जा स. ताकि लक्कन के मछरी मारे में सुविधा होई. सब लक्कन के देह पांक में लसराइल रहे. हम साइकिल चलावत डोम टोला चहुंप गइनी. पहिले उहां मूंज के पलानी, फूस के मड़ई आ खपड़ा के घर रहे. ओकरा जहे इंदिरा आवास बन गइल रहे. कुछ ईटा के मकान डोम लोग के आपन भी रहे. सुअरन के खोभार त रहे बाकिर देसी के जगे विदेशी नस्ल के सुअर रहस. हम ,को पकड़ी के गाछ के नीच आपन साइकिल खड़ा कइनी. ओ. करा में स्टैंड ना रहे, एह से साइकिल के पेड़ के जड़ में सटा के ओंठगा दिहनी. गाछ के छाया में कुछ लोग बइठल रहे. ओहमें से एक आदमी से हम पूछनी,

''भइया, चंद्रिका जी के घर केने बाटे?''

उहां बइठल लोग हमरा के अचरज के साथे देखे लागल. जइसे हमरा मुंह से कवनों गलत बात निकल गइल होखो. उ आदमी हमरा के नीचे से ऊपर तक देखलख,ओकरा बाद उल्टे हमरा से पूछ बइठल कि रउरा चंद्रिका जी के खोजत बानी के चंद्रिकवा डोम के ?

ओकर बात सुन के हम अकबका गइनी कि डोम बस्ती में जाके ओह आदमी के नाम असम्मान जनक भाषा में कइसे पूछी. हम अबही सोचते रही की का बोली ना बोली,तले उ फेरू बोल पड़ल.

''हमरा बुझाता कि रउरा चंद्रिकवा डोम के खोजे निकल बानी. हमरे नाव चंद्रिकवा डोम हटे. बोली का बात बा?'' हमरा के असमंजस में देख के उ आदमी टोकलस. 'दरअसल हम त तोहरे के खोजे खातिर निकलल बानी. बाकिर पुकारू नाव के साथ जाति के नाव धरल ठीक ना लागत रल.एही से चंद्रिका जी बोल पड़नी ह.''

'' रउर एह तरी इज्जत के साथ हमरा के खोजब त समुचा दिन रउरा बंवड़ेड़ा लेखा नाचते रह जाइब.काहे कि ई गांव हटे शहर ना. एह गांव में झगरू भाई मुखिया ना हउवन. बाकिर लोग उनुका के मुखिया जी कह के पुकारे ला. ओही जा रहमान मियां ब मुखिया के चुनाव जीतल बाड़ी,बाकिर अभी तक उनकरा के लोग मुखियाइन कह के ना पुकारे ला. खैर, रउआ आपन बात बताई!''

''चंद्रिका भाई , डाला के साइत देवे के बा, ओकरे काम खातिर सारन से शिव रतन भइया भेजले बानी. '' हम पाकेट से पइसा निकाल के देवल चहनी, तले उ हमरा को रोक दिहले. पूछले कि कहिया शादी बाटे. हम जइसही कहनी कि छह तारीख के बाटे त उ मुंह बिचकावत बोल पड़ल,

'' नाच बाजा, हाथी घोड़ा, टैंट शामियाना के साट्टा बायना हो जाला तब चंद्रिकवा डोम के इयाद

आवेला. ना चाही साइत के पइसा..''

''चंद्रिका भाई हाथ में आइल लछमी माई के जाये मत दीहीं. ''

'' बाबू साहेब ,बेकार के निहोरा मत करीं. चुप चाप घर चल जाई आ शिव रतन भाई के भेज देहब,हम सब कुछ समझ लेम..''एकाएक चंद्रिका गुस्सा के बोल पड़ल. ओकर आवाज सुनके ओकर मेहरारू रिझनी आ बेटा भुअरा दउरल पकड़ी के गाछ तर आ गइले. भुअरा अपना बाप से पूछलस कि काहे चिल्ला चिल्ली होत बाटे.

'' कुछो ना रे भुअरा, शादी के तीन दिन रह गइल बाटे, तब इहां के डाला के साइत लेके आइल बानी. तेंही बताव कि तीन दिन में डाला कइसे बनी?''

'' हमार बाबू ठीक बोलत बाड़ें. बांस हमरा घरे नइखें नूं. कीन के लावे के पड़ी. ओकरा के फाड़ के कमाची बनावे के पड़ी. तब नूं जाके डाला बनीं . '' भुअरा अपना बाप के बात के समर्थन कइलस.

'' चंद्रिका भाई, हमरा गलती के माफ करी. अइसे एक सप्ताह पहिले भइया साइत के पइसा मुरुलिया के देके तोहरा किहां भेजले रहस.बाकिर उ इहां ना आके दोसर चंद्रिका के इहां चल गइल...''

'' आरे ना आइल त हम का करीं.. '' बीचे में बात काट के चंद्रिका बोल पड़ले. जाये दीं ए भुअरा के बाबू, जब बाबू साहेब आपन गलती मानत बानी त ..''

'' जब दु आदमी बोलत होखे त बीच में तीसर के घुस के चुदुरबुदुर ना करे के चाहीं भुअरा के माई,हम बाबू साहेब से झगड़ा नइखीं करत. आपना नेग चार खातिर लड़त बानी. अब तुहीं बताव भुअरा के मास्टर बनावे खातिर रहमान मुखियाइन कातना रुपिया मांगत बाड़ी ?

'' एक लाख रुपिया . '' तपाक से भुअरा बोलल.

'' ठीक टाइम से रुपिया दियाई तबे भुअरा मास्टर बनी. ना दियाई त ना बनी. ओही तरी बाबू साहेब टाइम बिता के अइल बानी त हम का करीं. '' चंद्रिका आपन पूरा बात कह देहलेन.

'' चंद्रिका भाई, हमरा पर भरोसा करीं आ हमरो पूरा बात त कम से कम सुन त लिहीं. ''

'' ह मालिक, कहीं आपन पूरा बात. '' अपनापन जतावत रिझनी बोलल.

'' आरे हां, उहे त बतावे जा रहीं, हमरा चचेरा भाई राजन के ससुरार सिकटियां बाजार में बाटे. उनकरों सार के नाम चंद्रिका हटे. मुरलिया बिना सुझ बुझ के साइत के पइसा उनका घर में दे आइल. ''

अतना सुनते भुअरा आ ओकर माई जोर जोर से हंसे लागलें.

''फेरू का भइल बाबू साहेब ?

''आरे भाई भइल का, दुनू परिवारन में महाभारत शुरू हो गइल. '' अतना बोल के हम गाछ के निकल सोर पर गोर लटका के बइठ गइनी, काहे के खड़ा भइल भइल गोर दुखा गइल रहे.

''आगे का भइल मालिक!'' उत्सुकतावश रिझनी हमरा से पूछ बइठल.

'' आरे भाई हम बानी कि चंद्रिका भाई बोलत बानी आ रउरा सभे बाबू साहेब आ मालिक बोलत बानी. ई का तमाशा होता!हमनी के त इंसान हईस, एहमें छोट बड़ के अंतर काहे. रउरा सबे आपन हीन बावना के तेयागी आ उमर के लिहाज से बबुआ, भाई जी, भइया, चाचा, दादा बोले के कोशिश करीं. काल्ह भअर बबुआ मास्टर बनिहें. बाकिर बंशागत संस्कार के धीरे धीरे बदले के पड़ी. अचार,विचार आ बेवहारे से आदमी देवता बनेला. ओकर सब लोग पूजा करेला. '' हम एके सांस में जवन जवन मन में आइल बक गइनी. बाकिर उहां बटोराइल जन समूह कवनों तरह के आपने विगोध भा सुझाव ना दे पावल. देर त खामोशी छवले रहे. जइसे हमरा बात पर लोग मन ही मन मंथन करत होखो. आखिर में हम ही खामोशी के तुड़नी.

''अरे रिझनी बहन हम मुरलिया के बारे में का बतावत रही,तानी इयाद करी..''

'' बाबू साहेब..ना .ना भइया.रउरा बतइनीह कि मुरलिया चचेरा भाई के सार के घरे डाला के साइत के पइसा दे आइल.''उ थोड़का सा घबरा के बोलल.'' हां इयाद आइल, जब चंद्रिका जी आपना घर पहुंचले त उनकर मेहरारू सुनैना 21 गो रुपिया उनका हाथ में धरावत

कहली कि अब हमनी के डोम हो गइनीस का कि सारन से डाला बनावे के साइत के पइसा आइल बाटे.''

'' अरे तोहार दिमाग खराब हो गइल बा का? कि आवते आवते नटी पर चढ़ गइलू. जीजा जी पर असन इलजाम लगावत बारू, हम अबही मोटर साइकिल उठा के सारन जात बानी आ एह बात के पता लगावत बानी !

अतना कहत चंद्रिका जी आपन मोटर साइकिल के कीक दबवलें आ फटफट करत सारन के तरफ निकल पड़े. जब सारन पहुंचले त संयोग से घर में उनकरा बहिन आरती के अलावा केहूं ना रहे. उ आपन खीस ओकरे पर उतलें,

'' का रे अरतिया तोरा बिआह के बाद से हमनी के जात बदल गइल बा का कि इहां से मुरलिया डाला बनावे के साइत लेके गइल रल.''

आरे भइया, काहे अगिया बैताल भइल बाड़,गुस्सा थूक द आ नास्ता पानी कर. हम लावत बानी..''

''जबले जीजा से एह बात के फैसला ना हो जाई, हम तोरा घर के पानी तक ना छुअब. इज्जत के सवाल बाटे पता सारन वाला लोग अपना के का सोचेला''

'' अरे भइया, तोहार जीजा हमनी के डोम बना दिहले बानी, अब हमहूं एह घर में एक छन भी ना रहब, तोहरे साथे हमहूं चल चलेब..''

भाई बहिन में नोक झोक होते रहे तले कतही से घूमत घूमत मुरलिया उहां चहुंप गइल आ चंद्रिका मामा के देख के गोर छू के पान लगलस.आ बोल पड़ल, ''मामा हमरा से गलती हो गइल बाटे, माफ कर दी.''

'' कावना बात के माफी मांगत बाड़ मुरली?'' चंद्रिका जी मुरलिया के मायूस चेहरा देखके नरम पड़ गइले.

'' मामा, जब हमरा साइत के पइसा मिलल त ओह टाइम हम एफ एम रेडियो पर लोक गीत सुनत रही. चंद्रिका जी के माने हम सिकटियां समझनी आ साइत के पइसा मामी के दे अइनी.हमरा ना मालूम रहे कि डाला बनावे वाला पउनी के नाम भी चंद्रिका हटे. ''गिला सिस. कवा भुला के चंद्रिका जी ओकरा के अंकवारी में बांध लेले आ बोल पड़ले कि ते ना अतीस

मुरली त पता ना आज सार बहनोई में महाभारत जा के कहवा रुकित. ,ह बात पर चंद्रिका डोम, उनुकर मेहरारू रिझनी आ बेटा भुअरा हो हो करके हंसे लागल लोग.

❑❑

❍ झरिया, धनबाद, झारखंड.



केशव मोहन पाण्डेय

# बिरहिनि के बेजोड़ भावाभिव्यक्ति हवे चैता

चइत महीना चढ़ते चारु ओर तनी चटक रंग लउके लागेला। एह तरे कहल जाव त चइता परेम के पराकाष्ठा के प्रस्तुति हऽ। परेम में मिलन, बिछुड़न, टीस, खीस के प्रस्तुति ह। जिनगी के अनोखा पल के अनो खा भावन के अभिव्यक्ति के प्रस्तुति ह। बिहार आ उत्तर–प्रदेश में चइत महीना में गावे वाला गीतन के चइता, चइती चाहे चइतावर कहल जाला। चइता में मुख्य रूप से चइत माह के वर्णन त रहबे करेला, ई शृंगार रस में वियोग के अधिकता वाला लोकगीत हवे। गायिकी में चइता के 'दीपचंदी' चाहे 'रागताल' में गावल जाला। कई जने एहके 'सितारवानी' चाहें 'जलद त्रिताल' में गावेले। भले आधुनिकता के डिजिटल लाइट में चइता के चमक मद्धिम हो गइल बा, बाकिर आजुओ भोजपुर, औरंगाबाद, बक्सर, रोहतास, गया, छपरा, सिवान, देवरिया, कुशीनगर, गोरखपुर से चलत जहवाँ भोजपुरी के सचका सपूत बाड़े, चइता के लहर उठबे करेला। लोग एह लहर के लहार में महफिल जमाइए लेला। सचहूँ, चइता चित्त से जोड़ेला।

जइसन कि सभे जानते बा, भारत में चइत के बरिस के पहिलका महिना कहल जाला। बरिस के पहिलका महिना भाइला के नाते एकर बहुते महातम बा बाकिर गीतनों के कारने एकर महत्ता बढ़ जाला। फागुन के लहरदार गीतन के बाद चइत के उमसत मौसम में बिरह के वर्ण्य–विषय पर आधारित भोजपुरिया लोक–मानस में चइता के धून से मन कहीं अउरी उजझ जाला। मौसम में झनक बढ़े लागेला आ खेतन में रबी फसलो पाक के झाझर नियर बाजे लागेला। एह बेरा किसान लोग खेतन के सथवे खरिहानन में ढेर लउके ला लोग। एह कूल्ह अवसरन पर चइता के टेर से मन फेर होखे लागेगा।

अगर ध्यान से देखल जाव त सोंझे बुझा जाला कि ऋतु पर आधारित गीतन में जन–मानस पूरी तरह से तरंगित आ उन्मादित दिखाई देता। फगुआ के बाद चइता एकर एगो अदभुत नमूना ह। कजरी आदि त बड़ले बा। चइत के महिना में गावे के कारने एहके चइता कहल जाला। अपना भोजपुरिया क्षेत्र में एके कई जगहे 'घाँटो' कहल जाला। ई मगही में 'चइतार' आ मैथिली में 'चइतावर' के नाम से जानल जाला। चइता के बारे में कहल जाव कि एहमे सबसे अधिका मीठास, रस आ कोमलता रहेला, त कतहूँ से तनीको झूठ ना होई। चइता के एगो गीत में प्रकृति के साथ के उदाहरण देखीं –

मोती के मउनी जइसन तीसी पाके,
सोनवा जइसन मटर छिमी से झाँके,
गेहुँवा पर चढ़ल ललइया, हो रामा,
मोरा अँगनइया।
फुदुक चहके ले गौरैया, हो रामा,
मोरा अँगनइया।

चइत माह के बदलाव के ऋतु के रूप में जानल जाला। पेड़न से पुरान पतई गिर गइल रहेला आ नवागत से पेड़न पर रौनक रहेला। प्रकृति में चारू ओर नयापन से नया उल्लास लउके ला। एही महीना में राम जी के जन्मोत्सव मनावल जाला, से चइता में ओकर वर्णन त होखबे करेला, राधा–कृष्ण के बिरह के वर्णन भी होला। हमरा बुझाला कि राम नवमी चइते में अइला के कारने एकर प्रभाव चइता में भी लउकेला। एह गीत के पहिलका पंक्ति के सथवे हर स्थाई पंक्ति में 'हो रामा' के अलाप कुछ अइसने लागेला। कहल जाला कि चइता में छंद के ना, लय के कमाल होला। गायक लोग के मानल जाव त ई पढ़े से अधिका सुने के गीत ह। एह के गायिकी के कलाकारी त ई ह कि एहमें ढोलक के थाप आ झाल के झंकार पर हुकार होत रहे के चाही। एकर असर आदमीए–जन ना, चिरई–चुरुंगो पर पड़ेला। चइता सुनते मन के घूटन परा जाला। चइता लोक मन के गीत हो खला के सथवे शास्त्रीय संगीत के विधा ह। चइता के सामूहिक गायिकी के विलक्षण दृश्य होला। जब ई झलकूटिया रूप में गावल जाला त गायक लोग के सामान्यतः दू दल हो जाला। पहिलका दल एक–एक पंक्तियन के गावेला त दूसरका दल ओकरा स्थाई टेक के बेर–बेर दोहरा के स्वर के ऊँच करत रहेला। देखीं –

रामजी जे लिहनी जनमवा हो रामा
चइत महिनवा।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय जी अपना 'लोक साहित्य की भूमिका' में कहले बानी कि चइता के दू गो प्रकार होला– झलकुटिया आ साधारन। झलकुटिया माने जब गावे वाला लोग झाल कूट कूट के, बजा–बजा के गावे लें। एह चइता से सुर के मधुरता, मादकता के सथवे जोशो सामने आव. ला। अब साधारन चइता ऊ ह, जवना के केहू विशेष आदमी गावेले। चइता में मिलन होला, विरह होला। ईंहा आनन्दो बा त पीड़ा के सथवे तड़पो बा। ईंहवा रामजी के जनम के उठाह बा त महावीर के अवतारो के कहानी बा। प्रकृति के सुन्दरता बा त प्रकृति के उमसत रूप के दरदो बा। चइता परेम के गीत ह। एहमें संभोग शृंगार के कहानी राग–सुर में कहल जाला। एकरा वर्णनन के विषयो विविध बा। कही सुरूजदेव के उगलो के बाद चादर तनले आलसी पतिदेव के जगवला के कथा रहेला त कहीं दाम्पत्य जीवन के राग–रंग आ नेह–कलह के कहानी रहेला। कही पदरेसी पति के ना अइला के दरद रहेला, –

पीपर पात झरि गइले हो रामा
पिया नाही अइले।

आधुनिक विद्वान लोग चइता के दू गो रूप बतावेला– चइता आ चइती। एह आधार पर चइती स्थाई आ ठहराव से गावल जाला जवना में गावत घरी टाँसी के प्रयोग ना कइल जाला, चइता में कइल जाला। चइता के पुरुष प्रधनता में गावल बतावल जाला त चइती के स्त्री प्रधनता के। मूल रूप से दूनो के गायिकी कला में अंतर होला। गावे के केहू गावे बाकिर जेकर जवन भाव रही ओही लगले नामकरण होला। इहो कहल जाला कि चइता एक छंद के होला आ ओमे एक पंक्ति प्रमुख होला बाकिर चइती तीन आ चार छंद के होला आ ओमे सभ पंक्ति प्रमुख होला। वइसे शास्त्रीयता पर एकर विभक्ति प्रमाणिक नइखे। ऊँहा खाली 'चइता' बा। देखीं –

झीनी चुनरिया में लउके गोल नैना
रातरानी तहे–तह सजावेली रैना,
छछने मन जइसे पनछुइया, हो रामा,
मोरा अँगनइया।

समग्रता में देखल जाव त चइता में कहीं ननद–भउजाई के कवनो पनघट पर केहू के छेड़ खानी कइला के वर्णन रहेला त कहीं ग्वालीनन के मटका फोड़त कृष्ण के वर्णन। कई बेर चइता में वसंत के सौंदर्य आ फागुन के मस्ती के वर्णनो मिलेला।

प्रकृति के वर्णन के सथवे कई बेर संभोग शृंगार के सरस वर्णन लउके ला। टिकोरा आ कचनार के वर्णन एकर सुन्दर उदाहरण बा। वर्णन त सगरो मिलेला बाकीर भाव के परदा लागल रहेला। देखीं ना –

भगवती प्रसाद द्विवेदी

# आइल चइत उतपतिया हो रामा!

चइत के उतपाती महीना मस्ती के आलम लेले आ धमकल बा। कली–फूल के खिलावे के बहाना से बसंत अपना जोबन के गमक फइलावत चलल जा रहल बा। आम के मोजर में टिकोढ़ा लागि गइल बा आ सउंसे अमराई में टप–टप मधुरस टपकि रहल बा।

कोइलरि के कुहू–कुहू के कूक माहौल में एगो अनूठा मोहक रस घोरत बा। अइसना मदमस्त महीना में जदी मन के सपनन के सजीला राजकुमार परदेस के रोटी कमाए चलि गइल होखे, त बिरहिन हमजोली के वेदना पराकाष्ठा पर जा पहुंचेले। अंगइठी लेत रस से भरल देह, आलस से मदमातल सपनात आंखि। ख्वाब, खयाल आउर सपनन के इंद्रधनुष। अपना परदेसी के बाट जोहत बेकरार हो उठत बाड़ी प्रियतमा। बाकिर ऊ बेदरदा भला का जाने बिरहिन के आंतर के पीर! आइल त दूर, ऊ एगो पातिओ पठावल जरूरी ना बुझलस। बसंत बीति गइला का बाद ओकरा आवे भा पाती पठावे के का माने– मतलब!

*नाहिं भेजे पतिया,*
*आइल चइत उतपतिया हो रामा*
*नाहिं भेजे पतिया*
*विरही कोयलिया सबद सुनावे*
*कल ना पड़त अब रतिया हो रामा*
*नाहिं भेजे पतिया*
*बेली–चमेली फूले बगिया में*
*जोबना फुलल मोरा अंगिया हो रामा*
*नाहिं भेजे पतिया*

**चैताः प्रेम के रसगर लोकगीतन के मस्ती**

*अइहें पियवा त धरेब भर अँकवारी,*
*कोइलासिए ना रही बारी के बारी,*
*सोचि के मदन मन धधइले हो रामा,*
*पिया नाहीं अइले।*

चइत माने मधुमास के दिन। एह समय में अपना गाँवन–देहातन में फसिलन के पकला के, फसिलन के कटला के आ खरिहाने पहुँचला के चर्चा रहेला। अपना गाँवन में एह मधुमास के दिन में चइता गावे के पुरनका परंपरा भले आज बदल गइल बा, बाकिर आजुओ कुछ लोग बा जे हमरा टोला के फुलगेना संत के परंपरा के अदालत भाई के बहाने आगे बढ़ा रहल बा। आजुओ चइता गावे के पुरनका पर परा जीअत बा।

साँचे ह कि जब चइता के लय में ढोलक आ झाल के संगत मिलेला त सुने वाला के मन झनझना उठेला। समय के बवंडर में उधियात आज रोटी–रोजगार जोहत लोक–परंपरा देश के सीमा से निकल के विदेशो में पहुँच रहल बा बाकिर चिंतित रूप में। चिंता अपना परंपरा के मेटला के। चिंता रोटी के बहाना के। चिंता नाम के दौर में काम के डुबला के।

चिंता के त चिता कहले जाला। जब अपना परंपरा, अपना संस्कृति, अपना लोक–जीवन पर ग्रहण लागे लागी त मन के सगरो मीठास माहुर नियर हो जाई। हम सभके अप. ना मान–मरजाद के सथवे अपना लोक–रीति, लोक–परंपरा के बचवला के, सहेजला के, सँवरला के उद्यम करत रहे के चाहीं। अपना कूवत भर अपना लोक–गायकन के संरक्षण करत रहे के चाही आ समय–समय पर लोक–उत्सवन के गवाह बन के, असरा आ सहारा दे के, कान में अँगुरी डाल के, सगरो चिंता–फिकिर के भगा के गावत रहे के चाही –

*कोसिला घरे अइले रघुराई, हो रामा,*
*बाजे बधाई।*
*धनि दशरथ धा के दरसन चाहे ;*
*अन्तर–नयनन से परसन चाहें,*
*बलि जाले देखि मुसकाई, हो रामा,*
*बाजे बधाई।*

लोकगीत चइता के चइतन्यता के आधारो पर ई नि खटके कहला जा सकता कि आपन लोक–संस्कृति अति समृद्ध ह। समृद्धि के आँके–मापे खातिरे सही, जब कबो, कवनो कारण से एक बेर मुड़के अपने लोक–जीवन के देखीं, त सहजे बुझा जाई कि भोजपुरी के लोक जीवन के जइसन लोक–साहित्य, लोक परम्परो केतना समृद्ध ह।

हम आपन बाति कहीं तऽ चइता धून हमार सबसे प्रिय धून हऽ। एह लोक–धून के सहारे हम कइगो गीत लिखले बानी। कुछ तऽ एह लेख के उदाहरणे में प्रयुक्त हो गइल बा। लोक–धून के रस में गजबे के स्वाद होला। ऊ स्वाद कवनों बनाने जीभ पर फिरात रहे, इहो लोक–धुन के समृद्धि के बहाना बा।

❑❑

राजापुरी,नई दिल्ली

चइत महीना में गावल जाए वाला चैता सांच प्रेम के रसीला लोकगीत ह। फगुआ का बाद 'बुढ़वा मंगर'(पहिला मंगर) से चैता गावे के समहुत हो जाला।भोजपुरी में एकरा के चैता भा चइता, मगही में चैती आ मैथिली मे चैतावर कहल जाला। जब कवनो गायक ढोलक बजाके अकेलहीं चैता गावेला, त ओकरा के साधारन चैता कहाला। झलकुटिया चइता भा घांटो समूह में गवाला। झाल, ढोलक, झांझ वगैरह बजावत गायक दू दल में बंटा जालन। जब पहिला दल गीत के पहिल पांती गाव. ला, त दोसरका दल ओकरा तुरंत बाद टेक पद के ऊंच सुर में अलापेला। गते–गते सुर तेज, अउर तेज होत जाला आ गवैया गीत के चरम बिंदु प पहुंचावे के सिलसिला में उच्चतम सुर के इस्तेमाल कऽके सुननिहारन के जोश, हुलास आउर मस्ती के पराकाष्ठा पर पहुंचा देले। कतहीं–कतहीं गवनिहार अलगा–अलगा गोल बनाके चैता प्रतियोगिता के आयोजनो करेलन। ओइसे त लोकगीतन में आम तौर पर रचयिता के नांव ना पावल जाला, बाकिर चैता के पारम्परिक गीतन में कवि बुलाकी दास के नांव मिलेला–

*दास बुलाकी चइत घांटो गावे हो रामा*
*गाइ–गाइ विरहिन समुझावे हो रामा।*
*चइता गीत के शुरुआत 'ए रामा ' से होला।*

ओइसे ई कवनो जरूरी शर्त ना होला।हरेक पांती के अंत में 'हो रामा ' के प्रयोग होखेला। दोसरकी पांती के पहिल दू पद टेक पद का रूप में 'हो रामा ' के बाद जोड़ि दिहल जाला। चैता गावेवाला चइता के सिरीगनेस सुमिरन से करेला आ ओमें धरती माई (मातृभूमि)के इयाद करेला–

*ए रामा, सुमिरींले दुइयां*
*सुमिरि माता भुइयां हो रामा*
*एही ठहिएं*
*आजु चइत हम गाइब हो रामा*
*एहीं ठहिएं।*
*चैत बीति जाई हो रामा*

चैता में प्रेम के किसिम–किसिम के सतरंगी भावन के व्यंजना मिलेला। अधिकतर गीतन में संजोग सिंगार के रोमानी कथा रागन में रचाइल बा। कतहीं नायिका के नख से शिख तक के सुघ ारता के बरनन मिलेला, त कतहीं मरद–मेहरारू के प्रनय–नोकझोंक के झांकी। कतहीं दाम्पत्य–प्रेम के रोमानियत, त कतहीं विरह–बिछोह के मार्मिकता। रामजी के जनम, शिवजी के बियाह, सीता–स्वयंवर, राधा–किसन के रासलीला–जइसन अनेकानेक लघुकथानकन के जियतार भाव व्यंजना चैता गीतन में देखे के मिलेला। अगर प्रेयसी के गोर–सुकवार कलाई में हरिअर–हरिअर खनखनात चूड़ी होखे आ लिलार पर हरिअर रंग के बिंदी होखे, त का गजब के निखार आ जाई उन्हुका रूप–लावण्य में!

*ए रामा गोरी–गोरी बहियां में*
*हरी–हरी चूड़िया हो रामा*
*लिलरा पर,*
*लिलरा पर हरी रंग की बिंदिया हो रामा*
*लिलरा पर–*

प्रिया सपना के सतरंगी दुनिया में गोता लगावत अपना परदेसी बालम के बांहि में समाइल बाड़ी। तलहीं ननद उन्हुका के झकझोरिके नींन से जगा देत बाड़ी। मीठ सपना के तार–तार हो जाए से ऊ झुंझुवात कहत बाड़ी–

*सुतला में काहेला जगैलू हो रामा*
*भोरेहि भोरे*
*रस के सपनवा में हलइ अंखिया डूबत*
*हो रामा भोरेहि भोरे*
*अंगहि अंग अलसाए हो रामा*
*भोरेहि भोरे*
*पिया बिना हिया मोरा कुहुंकइ हो रामा*
*भोरेहि भोरे*
*चंपा के फुलवा मुरझाए हो रामा*
*भोरेहि भोरे*

सैंया, कतना नीमन होइत, अगर हमार चुनरी आ तहार पगरी एके रंग में रंगा दिहल जाइत! तन–मन के एकरूपता का संगहीं बहतरो के एकरूपता के कइसन नायाब स्थापना हो जाई तब!

*मोर चुनरिया सैंया तोर पगड़िया*
*एकहिं रंगे रंगाइब हो रामा*
*एकहिं रंगे एहि ठइयां झुलनी हेरानी हो रामा!*

अगर प्यारी–प्यारी झुलनी कतहीं गुम हो जाउ, त कहवां–कहवां जोहल जाउ ओकरा के? घर में, दुआर पर आकि ओह सेज पर, जवना प सउंसे रात बीतल बिया–

एहि ठइयां झुलनी हेरानी हो रामा
एहि ठइयां,
घरवा में खोजलीं, दुआरवा में खोजलीं
खोजि अइलीं सैंया के सेजरिया हो रामा
एहि ठइयां!

**कलवा ना पड़त**

आजदी पियऊ भुला जासु, त कहवां–कहवां ढूंढ़त–ढूंढ़त छिछिआत फिरसु घर वाली? आम के टिकोढ़ा गदरा गइल, बाकिर डाढ़–पात मदमस्त भइला का बावजूद बीतत चइतो में ओह निठुर परदेसिया के कवनो

अता–पता ना। चैत के बाद ओकर आइल भला कवना काम के!

*जब ई चइत बीति जाई हो रामा*
*तब पिया का करे आई!*
*अमवा मोजरि गेल, फरि गेल टिकोरवा*
*डारे–पाते भेल मतवलवा हो रामा*
*जब ई चइत बीति जाई हो रामा*
*तब पिया का करे आई?*

चैता के गीतन में सरलता का संगहीं जवन सरसता, कोमलता आउर मिठास अंतर्निहित बा, ऊ दोसरा जगहा दुलम बा। चाहे ननद–भौजाई के छेड़छाड़ होखे भा पति–पत्नी के प्रणयलीला के मनमोहक छटा। चाहे राधा–किसुन आ गोपियन के रासलीला के गाथा होखे, चाहे कवनो बिरहिन के विरह–बिछोह के मरम बेधेवाला

दिल दहलाऊ दास्तान। चइता के गीत आ गायकी के रसमयता, मादकता आ एकर सौन्दर्यबोध आ गीतन में चार चान लगावत लौंडन के नाच सुननिहारन–देखनिहारन के झूमे खातिर अलचार कऽ देला।

जब रस से लबालब भरल गगरी चैता के गीतन के मार्फत छलकत होखे, जब अंग–प्रत्यंग के गदरइला आ कसमसइला का संगहीं मन के सतरंगी भावना आउर आस–हुलास–उछाह गदरा उठल होखे, त फेरु कइसे धनिया अपना होरी के बिना चैन से अकसरुआ रहि सकेले? चइत के ई उतपाती महीना का ओकरा के कबो चैन से बइठे दी?

*जोबना फुलल मोरा अंगिया हो रामा*
*चैतहिं मासे,*
*कलवा ना पड़त सैंया बिनु रामा*
*चैतहिं मासे!*

***(साभार– जइसे अमवा के मोजरा से रस चुवेला )***

❑❑

❍ पटना, बिहार

अ अपनइत
(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)
अध्यक्ष : सरोज त्यागी संयोजक : जे.पी. द्विवेदी

बिम्मी कुंवर

# अबाटी बंटी

बंटी ... ना ना अबाटी बंटी
ओह मोहल्ला में अइला के मात्र साते आठ दिन बाद बंटी अपना करतूत से ऐही नांवें जानें जाये लगलन।

केहू के जगला के सीसा चेका बीग के फोर देस, त केहू के दुआर पर पानी से भरल बल्टी में माटी घोर देस, इ आएदिन के बंटी के काम रहे।

केहू पकड़ के मारे चलें त ओकरा मुंह पर खंखार बीग के भाग चलस ।
बंटी के माई ओरहन सुनत–सुनत हरान भ गइल रहली।

एक दिन आफिस जाये से पहिलही अपना साइकिल के दुरदसा देख के महेश चाचा चिचिआत बंटी के माई से कहे लगले
''रउरा से कह देत बानी सम्हार लिही अपना पूत के , हमरा साइकिल के हवा निकाल देलस, ओसही आफिस के देरी हो ता अब हम हवा भराइब तब नू आफिस जाइब !!''

बंटी के माई पूछली कि रउरा देखनी ह,

त चाचा बोलले कि मय मोहल्ला देखलस ह, रउरा काहे आन्हर बनल रहेनी, गजबे सहका के र खले बानी जा अपना बेटा के। रोकी महाराज ना त कवनो दिन बढ़िया से पिटा जइहे।

बंटी ओह मोहल्ला के कवनो घर ना छोड़ले रहे, जहवा ओकरा बदमासी के बतकही ना होत होखे।

केहू के बगीचा से नेनुआ तूर लेबे , केहू के छत प बहरी से खूंटी दार बास लगा के चढ़ के लउका तूर लेत रहे। मजेदार बात इ रहे कि उ कवनो चीज चोरा के तूर के घरे ना ले जात रहे , हेने ओने बीग–फेंक देत रहे।
एक बेर मोहल्ला के मय मेहरारू लोग मिल के

छोटहने गड़ही खन के छठ के घाट बनावत रहली जा , ओह मंडली में बंटी के माई भी रहली ।

गड़ही लिपा–पोता के सूखत रहे , दू दिन बाद नहाय खाय रहे ।

मोहल्ला के मय लइका सांझि खानि साइकिल चलावत रहुअन सन ओमे बंटी भी रहे।
बंटी अपना सगतियन से हारा बाजी लगवले कि जे हई लिपाइल गड़ही में पेसाब क दी ओकरा के अठ्ठनी के चकलेट दिहल जाइ। मय लइका बरिज देले सन कि गड़ही छठ करे खातिर लीपा ता, आ तू ऐमे पेसाब करबे?

बाकिर मनसरहग बंटी अउरी सहक के काम के अंजाम दे दिहलस।
लइका कुल हाला कइले स कि बंटी गड़ही में पेसाब क देले ह....

बड़ा हो हंगामा भइल । मय मेहरारू बंटी के माई भीरी ओरहन लेके गइली सन...

गुप्ताइन चाची दांत पीसत बोलली ''अरे इ अबाटी के गोड़ टूटो रे दादा, इ त धरम–करम से भी डेरात नइखे ''

आ हेने गुप्ताइन चाची के मुंह से सराप निकलल आ ओने बंटी के साइकिल एक्का से लड़ गइल आ बंटी के दहिना गोड़ टूट गइल ।

बंटी के माई रोवे लगली , गुप्ताइन चाची के हत्यारी लाग गइल रहे । बाकिर मोहल्ला के बेसी लोग खुश रहले जा कि अब बंटी सुधर जाइ ।

एक महीना तक मोहल्ला मे कवनो हो हंगामा ना भइल । बाकिर एक महीना बाद जब बंटी के प्लाटर कटा गइल त उ दोगुना बदमाशी संगे बहरी आइल ।

ओही सांझि खेल–खेल मे डक्टराइन के बेटी जिनकर अंगुरिया बार रहे भर मुठा ध के भुइया खूब पटकलस । डक्टराइन के सास ओकरा के खूब गारी दिहली ।

पड़ाइन चाची के बेटी सुधा लकठो कीन के घरे जात रहे ओकरा से लकठो के ठोंगा छीन के नौ दू एगारह हो गइल । सुधा गोड़ पटक–पटक के मोहल्ला के गली में खूब रोवे लगली।

अब उ सांझि खा खेले निकले त हाथ मे एगो आम के चइली ले ले रहे ओही से केहू के चलत इसकूटर मे त केहू के साइकिल के चाका में चइली फंसा देत रहे ।

मय मोहल्ला बंटी के अबाटीपन से हरान परसान रहे।
ओह महीना एगो घटना घटल , भइल इ कि बंटी के बाबूजी जे कि आर्मी मे सूबेदार रहुअन फगुआ के छुट्टी में घरे आइल रहुअन। उनकरा अइला के अगिला दिन भोरे–भोरे बंटी के रोवे चिचिआए के आवाज मोहल्ला के हर घर मे सुनाइ देले रहे।
बंटी जुमा के मुरगी चोरा के अपना मम्मी के पुरान बकसा मे बन क देले रहले, जुमा से केहू कह दिहल कि मुरगी बंटी ले के भगले ह ...उ भागत बंटी के घरे अइले आ मय बात बतवले, बंटी से जब उनकर बाबूजी पूछे लगले त उ साफे मना क दिहले।

घर में खोजाइ भइल कतहूँ मुरगी ना मिलल, तले आंगन के पीछा वाला कोठारी से कुछ आवाज आवत रहे जब सब केहू ओजुग गइल त कबाड़ में धइल टीना के बकसा में मुरगी छपिटात रहे। बकसा खोल के मुरगी के निकालल गइल आ जुमा के दिहल गइल।
लजइला मुहे बंटी के माई बाबूजी जुमा से क्षमा भी मगले।

जुमा के जाते मय मोहल्ला खदबदा के बंटी के ओरहन ले के उनकरा घरे चहुप गइल। सूबेदार साहेब के लाजे मुढ़ी नेव गइल।

दू दिन तक बंटी घरे में बन रहले। दू दिन बाद उनका घर के सोंझा जीप आ के रूकल । ओमे उनका घर के कुछ खास खास समान लदात रहें। ओकिलाइन चाची पूछली कि कहां के तैयारी हो ता? त सूबेदार चाचा बतवले कि फगुआ गांवही से मनावल जाइ, आ फेर बारह दिन बाद चइत के नवरात शुरू होखी त पूजा–पाठ भी गांव ही से करें के विचार भइल ह।

बाकिर बंटी के मय असलियत पता चल गइल रहे उनकर शहर से नांव कटवा दिहल गइल रहे। भर रस्ता बंटी के आपन मरखहवा चाचा इयाद परत रहुअन जिनकरा इसकूल में ओकर नांव लिखाई।

❑❑

चेन्नई

# नचनिया

## अंतिम भाग

डॉ. रेनू यादव

पूर्णिमा अंदर ही अंदर टूटे लागल । सात साल बियाह भइले हो गईल अऊर ओके पता ही नाहीं कि ओकर पति नचनिया हवँ । एतना सलीके से येकरे समने रहेन कि शहर क लोग भी फेल हो जइऽहँ । कभी महसूस नाहीं भईल कि उ झूठ बोलत बान, इ पहली बार रहल जब उ सोनपरी के नजदीक से देखलसि अऊर देखत सोनपरी में राजन क चेहरा नजर आईल लेकिन खुद के समझा लिहले रहल, 'हमहूँ का–का सोचत बानी । सोनपरी त पूरी की पूरी रंडी लागत बा, मर्द लगत नाहीं बा । राजन क सिर्फ आभास भईल । हो सकेला उनकर याद आवत बा ये ही से । वइसे भी जहाँ भी उ जाले ओके सबके में राजन नजर आवेन' ।

बहुत मुश्किल से दू दिन कटल अऊर तीसरकी शाम राजन घर लौट अइऽन । पूर्णिमा पहले से ही सोचले रहली कि घर अवत ही पहिले खबर लेवे क ह, घर में घुसे नाहीं देई लेकिन राजन क मुरझाइल मुँह देख के रात के एकांत करतीन मन का हाहाकर दबा गईल । बिस्तर पर राजन पहले से ही खर्राटे लेत रहऽन, पूर्णिमा जगाके कई बार पूछल चहली पर जइसे कि उ जागल ही न चाहत होखँ । कुंभकरण क नींद देखके पूर्णिमा अपने अंदर के ज्व.ाला दबावे लगली पर दबा न पउली । ये ही कारण आंगन में जाके रात भर बइठल रह गईली ।

सुबह खाना बनवले से पहले नहा–धोकर शीशा के सामने मेकप करत पूर्णिमा के राजन पीछे से अँकवारी में भर लिहऽन, 'का हो गईल ? आज बड़ा सजे–सँवरे क मन करत बा ?... चलऽ अच्छा ह गवना क दिन फिर से लौट आई... याद ह तू दिन त दिन, रात में भी सज–सँवर के सुतऽ... हम त पूरी तरह से फिदा हो गईल रहनी तुम्हारे खूबसूरती पर'

'अच्छा !... आज हम ही नाहीं सजब, आपके भी सजाईबऽ' खिलखिला के हँस पड़ली अऊर मेकप–किट लेके उठ खड़ी भईली

'धत्त... तू हमके काहें सजावल चाहत बाड़ू, मर्द भी कहीं इ सब यूज करेन का' ?

'अच्छा, बिजनेस करतीन यूज करेन अऊर हम कहब त नाहीं करहिंह...'

'करि सकेनी, पर अबहिन दिन बा'

'त का भईल... ? हमार मन रखे करतीन एतना त करि सकेनी' जबरदस्ती राजन के टेबल पर बैठा दिहलस, थोड़ी देर ना–नुकूर के बाद राजन मान गईऽन । पूर्णिमा के बहुत अच्छा मेकप नाहीं आवेला लेकिन उ मेकप क पीछे क चेहरा पहचान लिहली, 'सोनपरी' !

राजन की आँख झटका से खुल गईल । अब सफाई देवे करतीन कुछ न बचल । पूर्णिमा जइसे टूट गईली । ये बात से कम कि ओकर पति नच. निया हवँ बल्कि इ बात से कि उ इतने साल तक इ सच छुपवले रहऽन हवँ । पूर्णिमा के पेट में छोटी से छोटी बात भी नाहीं पचेला, फिर राजन कइसे..? उ आँख बंद कइके उन पर भरोसा कइले रहल लेकिन आज भरोसा भरभरा के गिर गईल कि केहू आपन पहचान कइसे छुपा सकेला ? उ जवने कमाई क रोटी खात बान का उ ओकरे प्रति गर्व महसूस नाहीं करत बान ? यदि उ आपन पहचान छुपा सकेन त अऊर भी न जाने का का छुपवले होइहँ ? उ अपने पति के जानत भी बा आ कि नाहीं, ओके अपनिय पर संदेह होखे लागल... ।

अक्सर छोट–मोट गलती पर ज्वालामुखी बन जाये वाली पूर्णिमा अब खामोश हो गईली, बोलल–बतियावल बंद करि दिहली । राजन क आँख हमेशा झुकल–झुकल रहे लागल, पर उ उनके समझवले क बहुत कोशिश कईन लेकिन पूर्णिमा जइसे काठ बन गईल होख । राजन सट्टा पर गईले से एक दिन पहले उनके झकझोरन, 'बात कर हमसे, हमरे ओर देख'

'हम आ कि नाच' ? पूर्णिमा एकदम दृढ़ होके आँख में आँखें डाल के पुछली ।

राजन सहम गईऽन, उ पूर्णिमा के भाव के समझ गईऽन । उ इहो समझ गईऽन कि दोनों में से केहू एक क चयन उनके अपंग बना देई । उ पूर्णिमा के कसके बाँह में भींच लिहलन लेकिन पूर्णिमा फिर से बात दुहरवली, 'हम आ कि नाच' ?

राजन क हाथ ढ़ीला पड़ गईल । उ आपन सामान बैग में भरे लगऽन । पूर्णिमा के जवाब मिल गईल रहल, ओकर आँसू राघव के आँसू की तरह बेतहासा निकले करतीन तड़प उठल । उ राघव के गोद में भरिके मायके की ओर चल पड़ली ।

राजन जब बी.ए. में पढ़त रहऽन ओ ही समय उनके एक्टिंग क चस्का लग गईल रहल । हीरो बनले क सपना लिहले कुछ दिन उ येहर ओहर भटकत रहऽन लेकिन कवनो थियेटर वाला उनके चांस नाहीं दिहलस । बी.ए. फाइनल ईयर के एनुअल फंक्शन में परफॉर्म करत समय उनके

ऊपर भरत नाट्य–ग्रुप क नजर पड़ल अऊर राजन के पहला चांस मिल गईल । पर भरत नाट्य ग्रुप क कर्ता–धर्ता गुरू विश्वेश्वरनाथ जी के सरग सिधरले के बाद ग्रुप चौपट हो गईल । तब ग्रुप क बड़हन भईया आनंद कहऽन कि नाट्य ग्रुप से कवनो खास आमदनी नाहीं होला, ये ही से कुछ अइसन काम कइल जाँ जवने से पइसा भी मिलल अऊर हमहन क शौक भी पूरा हो जा ।

अपने इच्छा के तोड़–मोड़ के मनवांछित रास्ता पर चल निकलल कवनो गलत त नाहीं ह । ग्लास आधा खाली बा आ कि आधा भरल, इ हमहन के डिसाइड करेक चाहीं । राजन आधा भरल ग्लास के ही भाग्य मान लिहऽन अऊर पूरे तन–मन से जुड़ गईऽन । लेकिन उनके पता रहल कि नाच गाना के विरोधी परिवार में अगर केहूँ के भनक भी लाग गईल त परिवार में जीयल मुश्किल हो जाई । बहुत दिन तक छुप–छुप के सट्टा में जायेक पड़ल, एक बार पिता जी के भनक लग गईल उ दिन उ सटहा से मार–मार कर पीठ लाल कर दिहऽन । ओकरे बाद सीधे ब्यूटी–प्रोडक्ट के कंपनी में जॉब मिलले के बहाना ढूँढ़ लिहऽन । बियाह के बाद पूर्णिमा से बात बात में नचनिया के विषय में बात कइले क कोशिश करँ, पर उनके नाच देखल पसंद हव लेकिन अपने पति के नचनिया बनत देखल नाहीं । राजन के नाच के बिना आपन अस्तित्व अधूरा लागऽ अऊर घर में छिपवले के अलावा अऊर कवनों चारा नाहीं बचल । उनके चाह राह अऊरी परिवार के बीच एक रहस्यमयी दीवार हमेशा खड़ी रहल लेकिन हरदम दिल में धुकधुकी समाईल रहल अऊर आज उ ह भईल जवने बात क डर रहल ।

आज स्टेज पर राजन सोनपरी नाहीं, नटराज बन गईल । सब हाय–हाय करे लगऽन कि कहीं स्टेज टूट न जा । पीछे से कई बार एनाउन्स भी भईल । रूपया क बौछार होत रहल । स्टेज के किनारे किनारे ग्राम प्रधान कुछ लवंडन के खड़ा दिहऽन कि कवनो स्टेज पर न चढ़ पावँ, सब दूर से ही मंत्रमुग्ध हो लँ । शहरी बाबू आगे के सीट पर स्टेज के सामने बइठ के आँख गड़उले देखत रहऽन अऊर पहचानत रहऽन सोनपरी के अंदर धधकती आग के, जेकर लौ स्टेज पर लपलपात रहल । सोनपरी उ लपलपात लौ में मूर्त बा आ कि अमूर्त, आज समझ से परे हो गईल । ओकर मन करत रहल कि सोनपरी के अंदर के धधकत लौ के अपने अंदर समेट ल अऊर खुद भी ओकरे साथ अमूर्त हो जा ।

कई ठो गीत के बाद जब सोनपरी गीत गावल शुरू कइलस, 'नचनिया जान के रजऊ३ नच. निया जान के रजऊ, छोड़ न दीह हमके छोड़ न दीह, दिल तोड़ न दीह... नचनिया जान के रजऊ...'

भीड़ सारे व्यवधान के पार कइके स्टेज पर चढ़ि गईल, स्टेज–तोड़ डाँस शुरू हो गईल । सोनपरी आज मान में नाहीं रहल । आज ओकर नाच कजरी के रोकले से भी नाहीं रूकत रहल । अइसने में मौका पउत शहरी बाबू सोनपरी के बाह में भींचके जबरदस्ती स्टेज के पीछे अंधेरे में धकेल के ले गईल, जहवाँ परदे से छन छन के हल्की रोशनी आवत रहल, 'का बात ह सोना, हमार जान... काहें परेशान बाडू ? आज तुहार अलग ही रूप दे खत बानी । तुहके कवन दुःख खात बा ?... हमके बताव हम सब दुःख दूर कर देइब... हम तुहके बहुत प्यार करब, कब्बो नाहीं छोड़ब... हमके कवनो फरक नाहीं पड़ेला कि तू नचनिया हऊ... हम तुहरे साथ आपन जिन्दगी गुजारल चाहत बानी... हमरे साथ चलऽ... हमार सोन...परी...'

सोनपरी उनके बाँह के कसाव से पूरी तरह छटपटाये लागल । जरत रेगिस्तान में आँसू के बारीश से मन अऊर भी छनछना उठल । दुनहुन क आँसू अपने–अपने बेवशी में एक होके निकले लागल । अंधड़ बरसात दूनों तरफ रहल लेकिन अपने अप. ने मौसम करतीन । शहरी बाबू बेकाबू होत के फिर से बात दुहरवन, "हम तुहसे बहुत प्यार करेनी सोनपरी"

'सोनपरी' नाम से राजन के झटका लागल अऊर उ एकाएक शहरी बाबू से अलग हो गईल । शहरी बाबू चौंक गईऽन अऊर ओकर आँसू पोछे करतीन आगे बढ़ऽन पर राजन अपने हाथ से रूकले क ईशारा कइके आपन आँसू खुदही पोंछ लिहऽन । अपने सीना से आँचल हटाके ब्लाऊँज से सॉफ्ट गेंद निकाल उनके हाथ में थमा दिहऽन । शहरी बाबू बिल्कुल भौचक्क हो के जड़ बनल अपने सोनपरी के देखत रहि गइऽन । अँसूअन से मेकप धुलले के बाद सोनपरी क चेहरा में से कवनो मर्द झँकले जइसन लागल । अब विवशता शहरी बाबू के अँखियन में रहल अऊर ओकर कदम खुद–ब–खुद पीछे की ओर हटे लागल...!!

❑❑

❍ डॉ. रेनू यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
भारतीय भाषा एवं साहित्य विभाग (हिन्दी)
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
यमुना एक्सप्रेस–वे
गौतम बुद्ध नगर
ग्रेटर नोएडा – 201312

# बिलारी के भागे क सिकहर

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

का जमाना आ गयो भाया,अजबे खुसुर–फुसुर ससर ससर के कान के भीरी आ रहल बा आ कान बा कि अपना के बचावत फिरत बा। एह घरी के खुसुर–फुसुर सुनला पर ओठ चुपे ना रह पावेलन स। ढेर थोर उकेरही लागेलन स। एह घरी के ई उकेरलका कब गर के फांस बन जाई, एह पर एह घरी कुछो कहल मोसकिल बा। रउवा सभे जानते होखब कि इहवाँ जेकर जेकर कतरनी ढेर चलत रहल ह, सभे एह घरी मौन बरती हो गइल बा। अब काहें, ई बाति हमरा से मति पूछीं, खुदही बूझीं।मलिकार के लगे ढेर अस्त्र शस्त्र बा, कब केकरा पर कवना के परयोग हो जाई आ जेकरा पर होखी ओहके बुझइबो ना करी कि अइसन काहें भइल बा। अब ई जवन कुछ बा तवन सभे के सोझा बा। कतरनी भलही बन्न हो गइल होखे बाकिर लेखनी त चल रहल बानी सन। अब हमरा से मति पुछेम कि लोग पढ़त काहें नइखे । लोग पढ़त रहत त साहित्य 20 रूपिया किलो के भाव से ना नु बिचात। तबो लेखनी ह कि अनथकले चलत चल जा रहल बा।

एह बेरा चुनावी डंका बाजल बा बाकिर भगदड़ नइखे लउकत। डार डार फाने वाली प्रजाति थाकल बुझाता। कुछ लोग त जगह के कमी के ठीकरा फोड़ रहल बा। सभे मुँह उठा के मलिकारे के निहारे में लागल बा आ मलिकार दुनिया में सभेले बड़की पाटी क सभेले बड़का मुखौटा का संगे 'अहम् ब्रह्मास्मि' के जाप कर रहल बाड़े। जाप करे वाला मनई आँख मून के जाप करेला। सोझा से केहू आओ भा जाओ भा भकोलवा पाथर मारि के सिकहर तूर दे, मलिकार अपना धियान में मगन त मगन।भकोलवन के प्रजाति के घुसपैठ सगरों रहबे करेला । फेर मलिकारे के पाटी कइसे बाचल होखी। इहे हाल नवकी, पुरनकी सगरे पाटी के बा।

सब जनला का बादो कि का हाल होखे वाला बा, तबो पुरनकी में ढेर जुत्तम पैजार चलत बा। इहवाँ 'एक अनार जाने कतने बेमार' बस एह खातिर बा लोग कि नम्मर बढ़ जाव। अइसना में सोचीं कि मलिकार के इहाँ क का हाल होखी। जहाँ टिकसवा जीत के गारंटी मान लीहल गइल होखे। अइसहूँ एह घरी 'मेरा परिवार, मेरी गारंटी' के राग खूबे बज रहल बा। मलिकार त एह घरी ओहू के मजबूरी बन चुकल बाड़ें, जे उनुका के पानी पी पी के कोसत रहेला। भुंवरी काकी के बेटहना मने मनराखन पांड़े के हाल त पूछहीं लायक नइखे। मनराखन पांड़े के नवका नवका खोज करे में मजा मिल रहल बा। ओप्पर से चइत के महीना, अपना संगे प्रेम–बिरह के पोटरी लेके ढोलक पर थाप दे रहल बा, तबो मनराखन पलायन के पीर में घेराइल बाड़ें।

हम रउवा लोगन के भकोल बिरादरी के चहुंप बतावत बतावत कहीं आउरे चहुंप गइनी। दिल्ली के नियरा के एगो जगहा से मलिकार के पाटी सात बेर जीतल बा। इहाँ के लोग चार बेर से बाहरी बाहरी के मउर बान्हत रहल ह। एना पारी भकोलवन के किरपा से ममिला भितरी वाला बन गइल। तबो इहाँ के लोग अब कुछ अउर खुसुर–फुसुर करि रहल बा। मने ई भितरी मनजोग नइखे लागत। लोग बाग भितरी वाला के करतूत के चिट्ठी बाँचे लागल बा। पाटी वाला लोग मोटा भाई के सोटा के डरे मन ममोस के पाछे–पाछे डोल रहल बा। ढेर लोग लंगड़ी मारे के फेरा में लाग गइल बा। हाल के हाल त ई बा कि 'याने कि' के संगे कचहरी जाये के पड़ल आ मलिकार के सड़क पर उतरे के परि गइल। अब त बिलारी के भागे से सिकहर त टूट चुकल बा, ओकरा लैनू भेंटाई कि ना, राम जाने। रउवा देखत रहीं भा हमरा संगे चली चइता के थाप आ अलाप सुने ———!

चइता के साध न पुरइहें हो रामा,
आइल चुनउवा।
कतनन के मुँह मुरझइहें हो रामा,
आइल चुनउवा॥

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

# अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

## दिल्ली प्रदेश इकाई

### कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

---

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र


KBS AIR & GAS

# KBS Air & Gas Engineering

## SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

# सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
## से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

## किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

**भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका**
**'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण**

**सदस्यता शुल्क**

आजीवन : 5100/- | संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कS के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।